संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-23 अंक- 70
पृष्ठ 8
शुक्रवार
27 नवम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- सर्दियों में ड्राई स्किन होगी दूर...

विचार- सौरव दास को रोककर सरकार...

खेल- पुजारा बोले हार्दिक पांड्या से पंजाब...

अधिकार के साथ कर्तव्य बोध कराता है संविधान-सीएम



- संविधान गौरव दिवस समारोह में बोले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ
- संविधान को लेकर भ्रम फैलाने वालों से सतर्क रहने की जरूरत

लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत की संप्रभुता किसी व्यक्ति, परिवार या जाति विशेष में नहीं, बल्कि देश के आम नागरिक में निहित है। संविधान ने प्रत्येक भारतीय को अधिकार और दायित्व दिया है कि वह देश का संरक्षक है। कोई व्यक्ति या परिवार यह दावा नहीं कर सकता कि उसके कारण भारत अस्तित्व में है या वही भारत का संरक्षक है। भारत का हर नागरिक संविधान की गरिमा और लोकतंत्र की रक्षा का उत्तरदायी है। मुख्यमंत्री गुरुवार को लोकभवन में संविधान गौरव दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे।मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा संविधान हम सबका गौरव और 145 करोड़ भारतवासियों का मार्गदर्शक है। यह हमें अधिकारों का स्मरण कराने के साथ कर्तव्यों का बोध भी कराता है और देश के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का अहसास कराता है। संविधान निर्माताओं ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के उस विचार को ध्यान में रखा था कि भारत का राजनीतिक भाग्य भारतवासी स्वयं तय करेंगे। इसी भावना से संविधान निर्माण की प्रक्रिया आगे बढ़ाई गई। भारत का संविधान दुनिया के उन विशिष्ट संविधानों में है, जिसने पहले दिन से ही बिना किसी जाति, क्षेत्र, भाषा और लैंगिक भेदभाव के प्रत्येक वयस्क भारतीय को मताधिकार प्रदान किया। दुनिया के कई ऐसे देश, जो स्वयं को लोकतंत्र का बड़ा समर्थक बताते हैं, वहां लंबे समय तक रंगभेद और लिंगभेद के आधार पर नागरिकों को समान अधिकारों से वंचित रखा गया। लेकिन भारत ने संविधान लागू होने के पहले दिन से ही प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान का अधिकार दिया। मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि आज कुछ लोग भ्रम की स्थिति पैदा करके लाल पुस्तिका लेकर लोगों को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। यदि उन्होंने संविधान की प्रति पढ़ी होती तो शायद भारत की संप्रभुता के संरक्षक होने का दावा करने का दुस्साहस नहीं करते। जब उन्हें अवसर मिला था, तब उन्होंने संविधान का गला घोंटने का प्रयास किया। आजादी के तत्काल बाद पहला संविधान संशोधन प्रेस की आजादी को बंधक बनाने के लिए किया गया। समय-समय पर अपने स्वार्थ के लिए संविधान में संशोधन किए गए। इन लोगों ने केवल संविधान ही नहीं, बल्कि देश की संवैधानिक संस्थाओं और लोकतंत्र को भी कठघरे में खड़ा करने का प्रयास किया। भारत पर लगातार आक्षेप लगाए और लोकतंत्र को कमजोर करने के षड्यंत्र किए। ऐसे लोगों के प्रयासों से सावधान रहना होगा। संविधान और लोकतंत्र को कमजोर करने की साजिशों से देश को बचाना हम सभी का दायित्व है। कांग्रेस ने बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर को कभी भारत रत्न नहीं लेने दिया। उन्हें संसद तक पहुंचने से रोकने के लिए भी प्रयास किए गए और उन्हें चुनाव हराने के लिए तमाम षड्यंत्र किए गए। पिछली सरकारों ने महापुरुषों के सम्मान की उपेक्षा की। समाजवादी पार्टी की सरकार ने कन्नौज मेडिकल कॉलेज से बाबा साहेब आंबेडकर का नाम हटा दिया था। असीम अरुण के पत्र लिखने पर प्रदेश सरकार ने दोबारा मेडिकल कॉलेज का नाम बाबा साहेब के नाम पर किया। इसी प्रकार उरई मेडिकल कॉलेज का नाम लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के नाम पर किया गया। महाराज सुहेलदेव ने एक हजार वर्ष पहले विदेशी आक्रांताओं को मुंहतोड़ जवाब देकर भारत की रक्षा की थी, लेकिन उनके नाम पर कोई स्मारक नहीं बना। प्रदेश में भाजपा की डबल इंजन सरकार आने के बाद बहराइच में उनका भव्य स्मारक बनाया गया। बहराइच मेडिकल कॉलेज और आजमगढ़ में नए मेडिकल कॉलेज का नाम महाराज सुहेलदेव के नाम पर रखा गया। राजा महेंद्र प्रताप सिंह, जिन्होंने 1915 में अफगानिस्तान में भारत की अंतरिम सरकार का गठन किया था, उनके नाम पर अलीगढ़ में राज्य विश्वविद्यालय का निर्माण कराया गया। नए संसद भवन में भी संविधान की मूल प्रति को विशेष स्थान दिया गया है।

विपक्ष नहीं, अवरोध पक्ष बन गई है कांग्रेस

पीएम मोदी बोले- महिलाओं को न्याय दिलाने से कोई नहीं रोक सकता



नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं को न्याय दिलाने का संकल्प दोहराया है। उन्होंने कहा कि कोई भी शक्ति उन्हें न्याय सुनिश्चित करने से नहीं रोक सकती। प्रधानमंत्री ने संसद में महिला आरक्षण विधेयक की हार के लिए एक विपक्षी दलश को जिम्मेदार ठहराया। गुरुवार को प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित एक हस्ताक्षरित लेख में मोदी ने कांग्रेस का नाम लिए बिना आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी ओबीसी आरक्षण कम करना और मुस्लिम आरक्षण लाना चाहती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि संविधान की यात्रा महिलाओं के योगदान को पहचाने बिना अधूरी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि विधायी निकायों में महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने वाला एक कानून एक विपक्षी दल द्वारा पारित नहीं होने दिया गया। यह सांविधानिक मूल्यों के प्रति उसकी अवहेलना को दर्शाता है। संविधान संशोधन विधेयक का उद्देश्य लोकसभा की मौजूदा 543 सीटों को परिसीमन के माध्यम से अधिकतम 850 तक बढ़ाना था। इससे 2029 के आम चुनावों से पहले संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण लागू करने का मार्ग प्रशस्त होता। विधेयक को लोकसभा में दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता थी, लेकिन अप्रैल में यह पारित नहीं हो सका। पीएम मोदी ने कहा कि भारतीय सांविधानिक लोकतंत्र में विपक्ष की स्पष्ट भूमिका है। उन्होंने दुख व्यक्त किया कि प्रमुख विपक्षी दल विरोध पक्ष के बजाय 'अवरोध पक्ष' बन गया है। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि दशकों से भारत के कई हिस्सों, खासकर आदिवासी क्षेत्रों में, नक्सलियों ने गरीबों को संविधान द्वारा गारंटीकृत अधिकारों से वंचित किया। उन्होंने इस वर्ष नक्सलवाद के सफल उन्मूलन को संतोषजनक बताया। मोदी ने कहा कि अब केवल दिमागी नक्सल बचे हैं, जो हमारे विकास पथ को पटरी से उतारने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने विपक्षी दल पर ओबीसी आरक्षण कम करने और मुस्लिम आरक्षण लाने की इच्छा को सबसे भयावह बताया, जिसके डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर भी पूरी तरह खिलाफ थे।

केरल हाईकोर्ट का फैसला: दुष्कर्म पीड़िता को 27 हफ्ते का गर्भ गिराने की अनुमति

जान का खतरा, फिर मंजूरी क्यों?

कोच्चि, एजेंसी। केरल हाईकोर्ट ने दुष्कर्म की शिकार नाबालिग लड़की को 27 सप्ताह से अधिक का गर्भ समाप्त कराने की अनुमति दे दी है। मेडिकल बोर्ड ने प्रक्रिया में अत्यधिक रक्तस्राव, संक्रमण, गर्भाशय फटने और यहां तक कि लड़की की मौत का खतरा बताया था। डॉक्टरों ने गर्भावस्था 32 सप्ताह तक जारी रखने की सलाह दी थी, लेकिन लड़की इसके लिए तैयार नहीं थी। अदालत ने उसकी इच्छा को प्राथमिकता देते हुए राज्य सरकार को बिना देरी गर्भपात की व्यवस्था करने का निर्देश दिया। डॉक्टरों के मुताबिक, इस अवस्था में गर्भपात कराने से लड़की की जान भी जा सकती है। इसके बावजूद अदालत ने लड़की की इच्छा को महत्व दिया। जस्टिस हरिशंकर वी मेनन ने कहा कि पीड़िता नाबालिग है और अपनी पढ़ाई कर रही है। ऐसे में उसकी इच्छा को भी सर्वोच्च महत्व दिया जाना चाहिए। अदालत ने मामले के तथ्यों और कानूनी स्थिति पर विचार करने के बाद कहा कि याचिकाकर्ता की मांग को तत्काल स्वीकार किया जाना जरूरी है।

हाईकोर्ट के निर्देश पर गठित मेडिकल बोर्ड ने लड़की की जांच की थी। इसके बाद अदालत को अपनी रिपोर्ट सौंपी। बोर्ड ने बताया कि गर्भावस्था के मौजूदा चरण में गर्भपात कराने से कई गंभीर जटिलताएं हो सकती हैं। मेडिकल बोर्ड ने जिन संभावित खतरों के बारे में बताया है, उनमें शामिल हैं:-

अत्यधिक रक्तस्रावरू प्रक्रिया के दौरान बहुत ज्यादा खून बहने का खतरा है। इससे लड़की की हालत गंभीर हो सकती है।

प्लेसेंटा का अंदर रह जानारू गर्भपात के बाद गर्भनाल का कुछ हिस्सा गर्भाशय में रह सकता है। इससे स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएं बढ़ सकती हैं।

गर्भाशय फटने का खतररू प्रक्रिया के दौरान गर्भाशय को नुकसान पहुंच सकता है।

भाजपा को अब हमारी परछाइयों से भी डर लगने लगा है-खरगे



- लखनऊ में खरगे संविधान रक्षा मार्च में खुलकर बोले
- खरगे पहुंचे अंबेडकर महासभा, अर्पित की डॉ. बीआर अंबेडकर की अस्थियों को श्रद्धांजलि

लखनऊ, संवाददाता। कांग्रेस ने गुरुवार को लखनऊ में संविधान दिवस के अवसर पर अपना संविधान रक्षा मार्च निकाला। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार पर राहुल गांधी और कांग्रेस से डरने का आरोप लगाया, कहा कि उन्हें अब उनकी परछाइयों से भी डर लगने लगा है। कांग्रेस कार्यालय में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए खरगे ने कहा कि सरकार राहुल गांधी और कांग्रेस से इतनी डरी हुई है कि उन्हें अब उनकी परछाइयों से भी डर लगने लगा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि पार्टी जब भी मौका मिलेगा, मार्च निकालेगी और अपने निर्धारित गंतव्य तक पहुंचेगी। खरगे ने कहा, युवा मित्रों, लखनऊ में कांग्रेस कार्यालय में बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हुए हैं। मुझे आज 26 नवंबर को संविधान सुरक्षा मार्च को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। यहां की सरकार राहुल गांधी, कांग्रेस पार्टी और हम सभी से इतनी डरी हुई है कि उन्हें अब हमारी परछाइयों से भी डर लगने लगा है। जब वे हमें देखते हैं तो हमसे डरना एक बात है, लेकिन भाजपा को अब हमारी परछाइयों से भी डर लगने लगा है! हम देखेंगे। जब भी मौका मिलेगा, हमारे साथी मार्च निकालेंगे। हम निश्चित रूप से उस गंतव्य तक पहुंचेंगे जहां हमें आज पहुंचना था। मुझे बस यही कहना है।संविधान दिवस के महत्व पर बोलते हुए, खरगे ने कहा कि संविधान सभा ने 26 नवंबर, 1949 को भारतीय संविधान को अपनाया, जिसने देश के प्रत्येक नागरिक को सशक्त बनाया। उन्होंने संविधान निर्माण की प्रक्रिया में उत्तर प्रदेश के योगदान पर भी प्रकाश डाला, अक्टूबर 1937 में राज्य विधान सभा द्वारा पारित एक प्रस्ताव का उल्लेख किया।आज एक ऐतिहासिक संविधान दिवस है। 1949 में इसी दिन, संविधान सभा ने भारतीय संविधान को अपनाया, जिसने देश के प्रत्येक नागरिक को सशक्त बनाया। हमने संविधान का मसौदा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और उत्तर प्रदेश ने इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अक्टूबर 1937 में, उत्तर प्रदेश विधान सभा ने भारत सरकार अधिनियम, 1935 को निरस्त करने का आह्वान करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया था। यह प्रस्ताव यहां लखनऊ में, कांग्रेस सरकार के दौरान विधानसभा में पारित किया गया था। इसमें कहा गया था कि भारत का संविधान एक निर्वाचित संविधान सभा द्वारा बनाया जाना चाहिए और भारत सरकार अधिनियम, 1935 की कोई आवश्यकता नहीं थी।

पिता बनने पर मिलेगी 15 दिन की छुट्टी

तमिलनाडु में पहली बार लागू हुई सुविधा, कब और कैसे ले सकेंगे अवकाश?

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु सरकार ने पुरुष सरकारी कर्मचारियों को 15 दिन का पितृत्व अवकाश देने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री सी जोसेफ विजय ने बृहस्पतिवार को इसका एलान किया और इस संबंध में आदेश भी जारी कर दिया। कर्मचारी बच्चे के जन्म से 15 दिन पहले या जन्म के छह महीने के भीतर किसी भी समय यह छुट्टी ले सकेंगे। राज्य में पुरुष सरकारी कर्मचारियों को पहली बार यह सुविधा मिलेगी। सरकार का कहना है कि पुरुष कर्मचारी लंबे समय से पितृत्व अवकाश की मांग कर रहे थे। इसी मांग को ध्यान में रखते हुए यह फैसला लिया गया है। राज्य में पहली बार पुरुष सरकारी कर्मचारियों को बच्चों की देखभाल के लिए इस तरह की छुट्टी मिलेगी। सरकार का मानना है कि बच्चे की परवरिश में पिता की भूमिका भी उतनी ही जरूरी है। सरकार ने पितृत्व अवकाश लेने के लिए समय-सीमा भी तय की है। इसके मुताबिक, विवाहित पुरुष सरकारी कर्मचारी बच्चे के जन्म से 15 दिन पहले छुट्टी ले सकते हैं। इसके अलावा बच्चे के जन्म के छह महीने के भीतर भी किसी समय 15 दिन का अवकाश लिया जा सकता है। यानी कर्मचारियों को अपनी सुविधा के अनुसार छुट्टी लेने का विकल्प मिलेगा।



PRESS
हमेशा आपके साथ

दैनिक एवं साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र

शहर समता
संयम ★ संस्कार ★ संतुलन

Website
www.shaharsamta.com

Subscribe on YouTube
youtube.com/@shaharsamtanews

सही खबर, सही समय पर

स्थापित 2001 • RNI Dainik UPHIN/2004/22466 • साप्ताहिक UPHIN/2001/03996 • कार्यालय 289/238 A कर्नलगंज प्रयागराज • संपर्क 9005239332, 9450482227

कुलपति का आदेश विधि विरुद्ध, कुलसचिव वरुण पांडेय के अधिकार बहाल

प्रयागराज। आरपीएनएलयू में कुलसचिव के प्रशासनिक और वित्तीय अधिकारों को लेकर चल रहा विवाद शासन के हस्तक्षेप के बाद खत्म हो गया है। शासन ने कुलपति की ओर से दो नवंबर को जारी आदेश को विधि विरुद्ध करार देते हुए प्रारंभ से ही प्रभावहीन घोषित कर दिया है। साथ ही कुलपति को निर्देश दिया है कि कुलसचिव वरुण कुमार पांडेय के वैधानिक अधिकारों और कामकाज में किसी तरह का हस्तक्षेप न किया जाए। डॉ. राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय में कुलसचिव वरुण कुमार पांडेय के प्रशासनिक और वित्तीय अधिकारों को लेकर चल रहा विवाद शासन के हस्तक्षेप के बाद समाप्त हो गया है। उत्तर प्रदेश शासन ने कुलपति की ओर से दो नवंबर को जारी उस आदेश को विधि विरुद्ध और प्रारंभ से ही प्रभावहीन घोषित कर दिया है जिसके तहत वरुण कुमार पांडेय के सभी प्रशासनिक और कार्यकारी अधिकार समाप्त कर डॉ. सुचित कुमार यादव को प्रभारी कुलसचिव बनाया गया था। शासन ने कुलपति को निर्देश दिया है कि वरुण पांडेय के पदीय दायित्वों के निर्वहन में किसी तरह की बाधा या हस्तक्षेप न किया जाए। दरअसल, विवि के वित्त नियंत्रक सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी ने 18 नवंबर को शासन के तीन विभागों वित्त, नियुक्ति और न्याय और विधि परामर्शी विभाग से मार्गदर्शन मांगा था। उन्होंने बताया था कि कुलसचिव के अधिकार समाप्त होने और दूसरे अधिकारी को प्रभार देने से वित्तीय पत्रावलियों के अनुमोदन में असमंजस की स्थिति बन गई है। वेतन, जीएसटी, टीडीएस, ईपीएफ, आपूर्तिकर्ताओं के भुगतान और परीक्षा संबंधी भुगतान की फाइलें लंबित थीं। मामले में वित्त और नियुक्ति विभाग ने उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय अधिनियम, 2020 की धारा–12 का हवाला दिया। इसके अनुसार कुलसचिव की नियुक्ति राज्य सरकार करती है और वह पूर्णकालिक अधिकारी होता है। कुलसचिव का पद रिक्त होने पर ही कुलपति विश्वविद्यालय के किसी अन्य अधिकारी को उसका प्रभार दे सकते हैं। शासन ने स्पष्ट किया कि वरुण पांडेय की तैनाती का आदेश प्रभावी है और पद रिक्त नहीं है। ऐसे में कुलपति को उनके अधिकार समाप्त करने या दूसरे अधिकारी को प्रभार देने का अधिकार नहीं है। अनु सचिव विजय कुमार सिंह यादव की ओर से जारी आदेश में कुलपति को वरुण पांडेय को उनके सभी वैधानिक अधिकारों के साथ काम करने देने के निर्देश दिए गए हैं।

पांच साल की बच्ची से दुष्कर्म के दोषी की अपील खारिज, 25 साल की सजा बरकरार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मुजफ्फरनगर में पांच वर्षीय बच्ची से दुष्कर्म के मामले में दोषी की अपील खारिज कर दी। कोर्ट ने 25 साल के सश्रम कारावास और 50 हजार रुपये जुर्माने की सजा बरकरार रखते हुए जेल में शेष सजा पूरी करने का आदेश दिया। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मुजफ्फरनगर में पांच वर्षीय बच्ची से दुष्कर्म के मामले में दोषी की अपील खारिज कर दी। कोर्ट ने विचारण अदालत की ओर से सुनाई गई 25 साल के सश्रम कारावास और 50 हजार रुपये जुर्माने की सजा बरकरार रखी है। यह फैसला न्यायमूर्ति अब्दुल शाहिद ने सुनाया है। मामला 11 अक्तूबर 2013 का है। खतौली थाना क्षेत्र के एक गांव में बच्ची खेलने निकली थी। काफी देर तक घर नहीं लौटने पर परिजनों ने तलाश शुरू की। इसी दौरान गन्ने के खेत से बच्ची के रोने की आवाज सुनाई दी। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने आरोपी को बच्ची के साथ दुष्कर्म करते देखा। हाईकोर्ट ने मेडिकल रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि बच्ची को गंभीर चोटें आई थीं। उसकी मेरठ मेडिकल कॉलेज में आपातकालीन सर्जरी करनी पड़ी और करीब 12 दिन अस्पताल में भर्ती रहना पड़ा। आरोपी की ओर से गवाहों की विश्वसनीयता और जांच में खामियों का तर्क दिया गया जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा कि पीड़िता की गवाही विश्वसनीय है और मेडिकल साक्ष्य भी घटना की पुष्टि करते हैं। अभियोजन आरोप साबित करने में सफल रहा है। कोर्ट ने आरोपी को जेल में ही शेष सजा पूरी करने का आदेश दिया।

गुर्दे से 16 सेमी का दुर्लभ व फटा हुआ ट्यूमर निकाला

प्रयागराज। एसआरएन अस्पताल के डॉक्टरों ने जटिल सर्जरी कर 55 वर्षीय महिला को नया जीवन दिया। महिला के दाहिने गुर्दे में 16 सेंटीमीटर का दुर्लभ ट्यूमर फट गया था, जिससे लगातार रक्तस्राव हो रहा था। हालत गंभीर होने पर डॉक्टरों ने करीब दो घंटे तक ऑपरेशन कर उसकी दाहिनी किडनी निकाल दी। फिलहाल महिला की स्थिति स्थिर है और तेजी से सुधार हो रहा है। प्रतापपुर की 55 वर्षीय महिला के गुर्दे से 16 सेंटीमीटर का दुर्लभ और फटा हुआ ट्यूमर निकालकर डॉक्टरों ने उसकी जान बचा ली। 'रीनल एंजियोमायोलिपोमा' नामक इस ट्यूमर के फटने से महिला के शरीर में अत्यधिक रक्तस्राव हो रहा था। स्थिति गंभीर होने के कारण डॉक्टरों ने तत्काल ऑपरेशन करने का निर्णय लिया। दो घंटे तक चले जटिल ऑपरेशन में महिला की दाहिनी किडनी निकालनी पड़ी। फिलहाल महिला की हालत स्थिर बताई जा रही है और उसमें सुधार हो रहा है। स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय (एसआरएन) अस्पताल के यूरोलॉजी विभाग में 21 नवंबर को एक महिला कमर के दाहिने हिस्से में तेज दर्द की शिकायत लेकर आई। इससे पहले उसने अल्ट्रासाउंड जांच कराई थी। इसमें गुर्दे में बड़ी गांठ होने का पता चला था। रविवार को सीटी स्कैन कराने पर पता चला कि 16 सेंटीमीटर का ट्यूमर फट चुका है। रेडियोलॉजी विशेषज्ञों के अनुसार, इस स्थिति में इंटरवेंशनल/रेडियोलॉजी प्रक्रिया से ट्यूमर का रक्तस्राव रोकना या उसे सुखाना संभव नहीं था। ऐसे में डॉक्टरों ने सोमवार को तत्काल सर्जरी करने का फैसला किया। ऑपरेशन के दौरान डॉक्टरों ने पाया कि महिला की किडनी खून के बड़े थक्के से घिरी हुई थी। चिकित्सा विज्ञान में इस स्थिति को 'पेज किडनी' कहा जाता है। इसके कारण महिला का रक्तचाप भी काफी बढ़ गया था। ट्यूमर गुर्दे के ऊपरी हिस्से में था और फटने के कारण लगातार रक्तस्राव हो रहा था। किडनी की गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे निकालना आवश्यक हो गया।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि मामले में यादव महासभा को सहवादी बनाने की मांग खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने श्रीकृष्ण जन्मभूमि–शाही ईदगाह विवाद में यादव महासभा को सहवादी बनाने की मांग खारिज कर दी। कोर्ट ने कहा कि आवेदक यह स्पष्ट नहीं कर सके कि मुकदमे के प्रभावी निस्तारण के लिए उनकी मौजूदगी क्यों जरूरी है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि–शाही ईदगाह विवाद से जुड़े मुकदमे में यदुवंशी/यादव/जादौन महासभा को सहवादी बनाने की मांग खारिज कर दी है। कोर्ट ने कहा कि वर्तमान मुकदमे में यह तय करना मुद्दा नहीं है कि यदुवंशी, यादव या जादौन समुदाय भगवान श्रीकृष्ण के वंशज हैं या नहीं। न्यायमूर्ति अवनीश सक्सेना ने भगवान श्रीकृष्ण विराजमान की ओर से मनीष यादव के माध्यम से दाखिल मूल वाद संख्या 2/2023 में यह आदेश दिया। महासभा ने अपने अध्यक्ष महावीर सिंह यदुवंशी के माध्यम से मुकदमे में वादी के रूप में शामिल किए जाने की अर्जी दी थी।

रेलवे ग्रुप डी भर्ती विवाद: प्रयागराज पहुंची रेलवे बोर्ड की उच्चस्तरीय समिति, अभ्यर्थियों से वार्ता शुरू

प्रयागराज। रेलवे ग्रुप डी भर्ती (सीईएन 08/2024) में कथित विसंगतियों और कटऑफ अंकों को लेकर अप्रेंटिस अभ्यर्थियों के आंदोलन का असर अब दिखने लगा है। दिल्ली कूच और प्रदर्शन की चेतावनी के बाद रेलवे बोर्ड ने पहल करते हुए उच्चस्तरीय समिति प्रयागराज भेजी है। बृहस्पतिवार को कोरल क्लब में समिति और अभ्यर्थियों के दस सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के बीच सीधी वार्ता शुरू हो गई है। इस वार्ता पर हजारों अभ्यर्थियों की निगाहें टिकी हैं। अब देखना होगा कि समिति के साथ बातचीत से अभ्यर्थियों की मांगों का कोई ठोस समाधान निकलता है या नहीं।



रेलवे ग्रुप डी भर्ती (सीईएन 08/2024) में कथित विसंगतियों और कटऑफ अंकों को लेकर चल रहा अप्रेंटिस अभ्यर्थियों का आंदोलन अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है। अभ्यर्थियों की दिल्ली कूच की चेतावनी के बाद रेलवे बोर्ड हरकत में आ गया है। बोर्ड द्वारा गठित एक उच्च स्तरीय समिति बृहस्पतिवार को प्रयागराज पहुंची। यहां नवाब युसुफ रोड स्थित कोरल क्लब में अभ्यर्थियों के दस सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ सीधा संवाद उनका चल रहा है।

इस दौरान कोरल क्लब के बाहर भी बड़ी संख्या में भर्ती पहुंचे हैं। दरअसल, रेलवे ग्रुप डी भर्ती में कथित विसंगतियों आदि को लेकर अभ्यर्थियों ने पिछले दिनों उत्तर मध्य रेलवे (एनसीआर) मुख्यालय पर दो दिनों तक जोरदार प्रदर्शन किया था। तब एनसीआर के अधिकारियों ने प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की थी। इसके बाद रेलवे भर्ती प्रकोष्ठ (आरआरसी) प्रयागराज ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर एक नोटिस जारी कर स्पष्ट किया कि कोर्स कंप्लीटेड एक्ट अप्रेंटिस (सीसीएए) अभ्यर्थियों के प्रत्यावेदनों को आवश्यक दिशा–निर्देश के लिए रेलवे बोर्ड भेज दिया गया है।

आरआरसी के इस नोटिस के बाद अभ्यर्थियों ने दिल्ली जाकर प्रदर्शन करने का ऐलान किया था, लेकिन उससे पहले ही रेलवे बोर्ड ने उच्च स्तरीय समिति गठित कर 26 नवंबर को प्रयागराज में ही वार्ता तय कर दी। फिलहाल कोरल क्लब में वार्ता शुरू हो चुकी है।

अभ्यर्थियों ने तैयार किया सात सूत्रीय मांगपत्र

इस बैठक में रखने के लिए अभ्यर्थियों ने अपना सात सूत्रीय मांग पत्र भी तैयार किये है। आंदोलन से जुड़े श्रीचंद्र यादव के अनुसार रेलवे द्वारा प्रशिक्षित योग्य सीसीएए अभ्यर्थी यदि अनारक्षित (ओपन/यूआर) मेरिट के बराबर या उससे अधिक अंक प्राप्त करते हैं, तो उन्हें नियमानुसार अनारक्षित सीटों पर तत्काल चयन का अवसर दिया जाए और इसे सीईएन 08/2024 (लेवल–01) भर्ती से ही लागू किया जाए। इसके अलावा शारीरिक दक्षता परीक्षा (पीईटी) में मिली छूट को उनके प्रशिक्षण और कार्य–कौशल का परिणाम माना जाए, न कि इसे अनारक्षित मेरिट से वंचित करने का आधार बनाया जाए। इसके अलावा मांग पत्र में 20 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण के तहत भूतपूर्व सैनिकों (एक्स–सर्विसमैन) की रिक्त बची सीटों को योग्य अप्रेंटिस अभ्यर्थियों से भरने तथा टेक्नीशियन व एएलपी जैसी तकनीकी भर्तियों में कम से कम 20 प्रतिशत आरक्षण देने की बात कही गई है।

प्रयागराज से मुंबई जाने वालों को मिलेगी राहत, रोज चल सकती है दुरंतो एक्सप्रेस

प्रयागराज। प्रयागराज से मुंबई और अहमदाबाद जाने वाले यात्रियों को जल्द राहत मिल सकती है। दुरंतो एक्सप्रेस को सप्ताह में दो दिन के बजाय रोज चलाने और अहमदाबाद एक्सप्रेस के फेरे बढ़ाकर सप्ताह में तीन दिन करने के प्रस्ताव पर रेलवे बोर्ड में मंथन शुरू हो गया है।

संगम नगरी से मुंबई और अहमदाबाद जाने वाले यात्रियों के लिए राहत भरी खबर है। प्रयागराज जंक्शन से लोकमान्य तिलक टर्मिनस (मुंबई) के बीच चलने वाली प्रीमियम ट्रेन दुरंतो एक्सप्रेस का संचालन अब सप्ताह में दो दिन के बजाय प्रतिदिन किया जा सकता है। वहीं प्रयागराज–अहमदाबाद साप्ताहिक एक्सप्रेस को भी सप्ताह में तीन दिन चलाए जाने का प्रस्ताव रखा गया है। हाल ही में वाराणसी में स्लीपर वंदे भारत एक्सप्रेस के उद्घाटन समारोह के दौरान उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने केंद्रीय रेल मंत्री के समक्ष दोनों ट्रेनों के फेरे बढ़ाने का मामला प्रमुखता से उठाया था।

मुद्दा उठने के बाद रेल महकमा दुरंतो एक्सप्रेस को हर रोज चलाए जाने की तैयारियों में जुट गया है। इसे लेकर कागजी कार्रवाई भी शुरू कर दी गई है। बताया गया कि यूपी विधानसभा चुनाव के पहले इन दोनों ट्रेनों के फेरे बढ़ाए जा सकते हैं। प्रयागराज से मुंबई जाने वाले यात्रियों की भारी भीड़ को देखते हुए लंबे समय से दुरंतो एक्सप्रेस को प्रतिदिन चलाए जाने की मांग उठ रही थी।

वर्तमान में यह ट्रेन प्रयागराज से प्रत्येक मंगलवार और शनिवार को ही संचालित होती है, इसके कारण यात्रियों को कंफर्म टिकट मिलने में मशक्कत करनी पड़ती है। वहीं, व्यापार और रोजगार के सिलसिले में गुजरात जाने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए प्रयागराज–अहमदाबाद एक्सप्रेस के फेरे बढ़ाने की भी जरूरत महसूस की जा रही थी। अभी इस ट्रेन का संचालन सप्ताह में महज एक ही दिन होता है।

अब इस पहल के बाद रेलवे बोर्ड स्तर पर इन प्रस्तावों पर मंथन शुरू हो गया है। उत्तर मध्य रेलवे के सीपीआरओ डॉ. शिवम शर्मा का कहना है कि मामला रेलवे बोर्ड में विचाराधीन है, मंत्रालय ही इसमें अंतिम निर्णय लेगा।

प्रयागराज छिवकी के रास्ते चलेगी कन्याकुमारी–बनारस विशेष ट्रेन

रेल प्रशासन ने प्रयागराज छिवकी रेलवे स्टेशन के रास्ते कन्याकुमारी–बनारस विशेष गाड़ी चलाने का निर्णय लिया है। यह विशेष ट्रेन कन्याकुमारी से तीन दिसंबर को और बनारस से नौ दिसंबर को चलेगी।

गाड़ी–06051 कन्याकुमारी–बनारस विशेष ट्रेन तीन दिसंबर को कन्याकुमारी से दोपहर 2रू30 बजे प्रस्थान करेगी। ट्रेन तीसरे दिन दोपहर 3रू00 बजे प्रयागराज छिवकी पहुंचेगी और 3रू05 बजे प्रस्थान करेगी। यह उसी रात 8रू00 बजे बनारस पहुंचेगी। वापसी में गाड़ी–06052 बनारस–कन्याकुमारी विशेष ट्रेन नौ दिसंबर, को बनारस से रात 10रू30 बजे रवाना होगी। यह दूसरे दिन तड़के 2रू45 बजे छिवकी पहुंचेगी और 2रू50 बजे आगे के लिए प्रस्थान करेगी। ट्रेन चौथे दिन सुबह 6रू30 बजे कन्याकुमारी पहुंचेगी। इस विशेष गाड़ी में 20 कोच लगाए जाएंगे। इनमें पांच वातानुकूलित तृतीय श्रेणी, दस वातानुकूलित तृतीय इकॉनमी श्रेणी और तीन शयनयान श्रेणी के कोच शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, दो जनरेटर सह लगेज यान भी होंगे। यह ट्रेन नागरकोविल, तिरुनेलवेली, मदुरै, चेन्नै एगमूर (एग्मोर), विजयवाड़ा, जबलपुर और सतना जैसे प्रमुख स्टेशनों पर रुकेगी।

माघ मेले में 10 फीसदी बढ़ेगी बिजली व्यवस्था, लगेंगी 27,500 एलईडी स्ट्रीट लाइटें

प्रयागराज। माघ मेला 2027 में श्रद्धालुओं को बेहतर और निर्बाध बिजली व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए तैयारियां तेज कर दी गई हैं। इस बार पिछले मेले के मुकाबले विद्युत व्यवस्था में करीब 10 फीसदी इजाफा किया जाएगा। मेला क्षेत्र में 29 सब–स्टेशन, 23,120 बिजली के पोल और 27,500 एलईडी स्ट्रीट लाइटें लगाई जाएंगी। माघ मेला 2027 में श्रद्धालुओं को निर्बाध बिजली आपूर्ति देने के लिए पिछले मेले के मुकाबले इस बार विद्युत व्यवस्था में करीब 10 फीसदी की बढ़ोतरी की जा रही है। मेला क्षेत्र में 29 सब–स्टेशन बनाए जाएंगे। इसके अलावा 23,120 बिजली के पोल लगाए जाएंगे। वहीं, पूरे मेला क्षेत्र में 27,500 एलईडी स्ट्रीट लाइटें लगाई जाएंगी। पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के एमडी संदीप कुमार ने माघ मेला 2027 के भूमि पूजन के दौरान यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पिछले मेले में 25 हजार एलईडी स्ट्रीट लाइटें लगाई गई थीं, जिन्हें इस बार बढ़ाकर 27,500 किया जा रहा है। इसी तरह बिजली आपूर्ति के लिए डीजी सेट की संख्या 28 से बढ़ाकर 32 कर दी गई है। शिविरों में बिजली कनेक्शन की संख्या भी पिछले मेले के 66,220 के मुकाबले करीब 10 हजार बढ़ाई जाएगी, ताकि सभी शिविरों तक पर्याप्त बिजली पहुंचाई जा सके। सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइटों की संख्या भी 500 से बढ़ाकर 600 की जा रही है। एमडी ने बताया कि बिजली आपूर्ति बाधित होने की स्थिति में तत्काल वैकल्पिक व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए फीडरों पर आरएमयू (रिंग मेन यूनिट) लगाए जाएंगे। इससे एक स्थान पर बिजली आपूर्ति बाधित होने पर दूसरे स्रोत से तत्काल बिजली बहाल की जा सकेगी। इसके अलावा शॉर्ट सर्किट और आग की घटनाओं की रोकथाम के लिए एमसीबी लगाने की व्यवस्था भी की जा रही है। मेला क्षेत्र में बिजली संबंधी शिकायतों और सूचनाओं के लिए क्यूआर कोड की सुविधा भी रहेगी। इसे स्कैन करके श्रद्धालु बिजली विभाग से संबंधित जानकारी प्राप्त करने और शिकायत दर्ज कराने के लिए संपर्क कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि सभी कार्यों को दिसंबर के मध्य तक पूरा करने का प्रयास है। हालांकि, जरूरत पड़ने पर दिसंबर के अंत तक का समय लग सकता है। पिछले मेले के मुकाबले बिजली व्यवस्था में करीब 10 फीसदी बढ़ोतरी होगी। मेला क्षेत्र में 29 सब–स्टेशन बनाए जाएंगे। बिजली आपूर्ति के लिए 23,120 नए पोल लगाए जाएंगे। पूरे मेला क्षेत्र में 27,500 एलईडी स्ट्रीट लाइटें लगेंगी। डीजी सेट की संख्या 28 से बढ़ाकर 32 की जाएगी। शिविरों में बिजली कनेक्शन की संख्या 66,220 से करीब 10 हजार बढ़ाई जाएगी। सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइटें 500 से बढ़ाकर 600 की जाएंगी। बिजली आपूर्ति बाधित होने पर तत्काल बहाली के लिए फीडरों पर आरएमयू लगाए जाएंगे। शॉर्ट सर्किट और आग की घटनाओं की रोकथाम के लिए एमसीबी लगाने की व्यवस्था होगी। बिजली संबंधी जानकारी और शिकायतों के लिए क्यूआर कोड की सुविधा मिलेगी। सभी तैयारियां दिसंबर मध्य तक पूरी करने का लक्ष्य, जरूरत पड़ने पर दिसंबर अंत तक काम होगा।



फर्जी समझौते का दावा खारिज, चकबंदी विभाग के तीनों आदेश बरकरार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने देवरिया के चकबंदी विवाद में फर्जी समझौते के आरोप को खारिज करते हुए झब्बू राय की याचिका निरस्त कर दी। कोर्ट ने भूमि में आधा हिस्सा देने संबंधी चकबंदी विभाग के तीनों स्तरों के आदेश बरकरार रखे। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने देवरिया जिले के चकबंदी विवाद में फर्जी समझौते के आधार पर भूमि में आधा हिस्सा दिए जाने के आरोप को अस्वीकार करते हुए याची झब्बू राय की याचिका निरस्त कर दी है। कोर्ट ने चकबंदी अधिकारी, सहायक बंदोबस्त अधिकारी और उप संचालक चकबंदी के आदेशों को बरकरार रखा है। यह आदेश न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी ने दिया। मामला उत्तर प्रदेश चकबंदी अधिनियम, 1953 की धारा 9(2) के तहत दाखिल आपत्तियों से संबंधित था। विपक्षियों ने विवादित भूमि में आधे हिस्से पर अपना दावा किया था। इसे आपसी समझौते के आधार पर स्वीकार कर लिया गया था। याची झब्बू राय ने समझौते को फर्जी बताते हुए कहा था कि उस पर उसके हस्ताक्षर नहीं हैं। हालांकि, चकबंदी विभाग के तीनों स्तरों पर उसे राहत नहीं मिली।

हाईकोर्ट ने पाया कि समझौते के हस्ताक्षरों को लेकर विशेषज्ञों की दो रिपोर्टें परस्पर विरोधी थीं। ऐसे में पुनरीक्षण अधिकारी ने दोनों रिपोर्टों को अस्वीकार कर उचित निर्णय लिया। समझौते पर अमल भी हो चुका था और दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं ने हस्ताक्षरों की पहचान की थी। इसके अलावा, समझौते के अन्य पक्षकारों ने भी इसे चुनौती नहीं दी थी। कोर्ट ने कहा कि जालसाजी साबित करने का दायित्व याची पर था लेकिन वह इसे साबित करने में विफल रहा। इसी के साथ कोर्ट ने याचिका खारिज कर दी।

बोर्ड का आदेश रद्द, छह माह में मुकदमा निपटाने का निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि राजस्व परिषद पुनरीक्षण याचिका में घोषणात्मक वाद के गुण–दोष पर फैसला नहीं दे सकता। ऐसा करना ट्रायल कोर्ट के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप है। कोर्ट ने बोर्ड का आदेश रद्द कर मुकदमे को छह महीने में निपटाने का निर्देश दिया। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि राजस्व परिषद पुनरीक्षण याचिका के जरिये किसी घोषणात्मक वाद पर गुण–दोष के आधार पर फैसला नहीं दे सकता। ऐसा करना ट्रायल कोर्ट के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप करने जैसा है। बोर्ड पुनरीक्षण की सुनवाई के बहाने प्रथम दृष्टया अदालत की भूमिका नहीं निभा सकता। इस टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति आशुतोष श्रीवास्तव की एकल पीठ ने भदोही जिले की एक याचिका स्वीकार कर ली। कोर्ट ने राजस्व बोर्ड का आदेश रद कर दिया। साथ ही घोषणात्मक मुकदमे का निस्तारण प्रमाणित आदेश की प्रति प्राप्त होने की तारीख से यथासंभव छह महीने में करने का निर्देश दिया। मामले के अनुसार, याची ने कृषि भूमि में अपने अधिकारों की घोषणा के लिए राजस्व संहिता की धारा 144 के तहत मुकदमा दाखिल किया था। उसका दावा 21 मई 1985 को हुए मौखिक पारिवारिक समझौते पर आधारित था। उसने वर्ष 2008 और 2010 में हुए दो बिक्री विलेखों को भी शून्य घोषित करने की मांग की थी। प्रतिवादी ने मुकदमे को परिसीमा, पोषणीयता (सुनवाई योग्य होने), नोटिस, मूल्यांकन और वाद–कारण के आधार पर खारिज करने की अर्जी दी। एसडीएम ज्ञानपुर ने 20 मार्च को इसे खारिज कर दिया। इसके खिलाफ आयुक्त के यहां अपील भी खारिज हो गई। बाद में राजस्व बोर्ड ने पुनरीक्षण स्वीकार कर दोनों आदेश पलट दिए और पारिवारिक समझौते के अस्तित्व तथा वैधता पर भी विचार किया। हाईकोर्ट ने कहा कि एसडीएम का आवेदन खारिज करने वाला आदेश अंतिम आदेश नहीं था, इसलिए इसके खिलाफ अपील नहीं की जा सकती थी। हालांकि, मूल आदेश के विरुद्ध पुनरीक्षण सुनवाई योग्य था। बोर्ड ने अपील की पोषणीयता पर विचार किए बिना ऐसे मुद्दों पर निष्कर्ष दे दिए, जिन पर निचली अदालत ने भी विचार नहीं किया था। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि मुकदमे के साक्ष्य और गुण–दोष का निर्णय ट्रायल कोर्ट को ही करना है।

कॉलेज में छात्रा से मारपीट, छेड़छाड़ के मामले की जांच के लिए समिति गठित

प्रयागराज। ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज में छात्रा से मारपीट, अभद्रता और छेड़छाड़ के आरोपों की जांच शुरू हो गई है। प्राचार्य ने तीन वरिष्ठ शिक्षकों की समिति गठित कर एक सप्ताह में रिपोर्ट मांगी है। जांच में प्रॉक्टर और मौके पर मौजूद शिक्षकों की भूमिका भी परखी जाएगी। ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज में बीए द्वितीय वर्ष की दलित छात्रा से मारपीट, अभद्रता और छेड़छाड़ के आरोपों की जांच शुरू हो गई है। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आनंद शंकर सिंह ने बुधवार को छात्रा से घटना की जानकारी लेने के बाद मामले की जांच के लिए तीन वरिष्ठ शिक्षकों की समिति गठित की है। यह समिति छात्रा के आरोपों के साथ–साथ घटना के समय मौके पर मौजूद प्रॉक्टर और अन्य शिक्षकों की भूमिका की भी जांच करेगी। तीन सदस्यीय समिति में सहायक प्रॉक्टर धीरज चौधरी व रुचि गुप्ता और असिस्टेंट प्रोफेसर अमरजीत को शामिल किया गया है। समिति एक हफ्ते में अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। इसके आधार पर कॉलेज प्रशासन आगे की कार्रवाई करेगा। प्रबंधन यह भी जांचेगा कि घटना के समय प्रॉक्टर व अन्य शिक्षक वहां मौजूद थे या नहीं और छात्रा की शिकायत पर क्या कदम उठाए गए। छात्रा का आरोप है कि उसने मौके पर मौजूद प्रॉक्टर से हस्तक्षेप की मांग की थी लेकिन उल्टा उसे ही डांट दिया गया। उसने यह भी आरोप लगाया कि कुछ प्रोफेसर घटना के दौरान खड़े होकर तमाशा देखते रहे। वहीं कर्नलगंज पुलिस छात्रा का बयान दर्ज कर चुकी है और आरोपी छात्र अंकुर सिंह के खिलाफ पहले ही प्राथमिकी दर्ज की जा चुकी है। पुलिस अब कॉलेज पहुंचकर प्रॉक्टर, प्रोफेसरों, छात्राओं व अन्य प्रत्यक्षदर्शियों से पूछताछ करेगी और सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर आरोपों की पुष्टि करेगी। यह जांच घटना से जुड़े सभी पहलुओं को स्पष्ट करने का प्रयास करेगी।

एडीजी के पूर्व पीआरओ की कार को डंपर ने 50 मीटर तक घसीटा, पत्नी समेत 5 घायल

प्रयागराज। भगवतपुर चौराहे के पास मंगलवार शाम तेज रफ्तार बालू लदे डंपर ने इंस्पेक्टर रविभूषण श्रीवास्तव की कार में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर के बाद कार करीब 50 मीटर तक घिसटती चली गई। हादसे में इंस्पेक्टर, उनकी पत्नी, बेटे और मित्र समेत पांच लोग घायल हो गए। पत्नी की हालत गंभीर है। एडीजी जोन प्रयागराज के पूर्व पीआरओ और इंस्पेक्टर रविभूषण श्रीवास्तव की कार को मंगलवार शाम एयरपोर्ट थाना क्षेत्र के भगवतपुर चौराहे के पास बालू लदे तेज रफ्तार डंपर ने जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार करीब 50 मीटर तक घिसटती चली गई। हादसे में इंस्पेक्टर रविभूषण श्रीवास्तव, उनकी पत्नी, बेटे और मित्र समेत पांच लोग घायल हो गए। गंभीर रूप से घायल पत्नी विनीता श्रीवास्तव को शहर के एक निजी अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया है। हादसे के बाद डंपर चालक मौके से फरार हो गया।

एनएसएस द्वारा ईश्वर शरण में संविधान दिवस पर व्याख्यान का आयोजन

प्रयागराज। राष्ट्रीय सेवा योजना ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज द्वारा आज 26 नवंबर 2026 को महाविद्यालय परिसर में संविधान दिवस के तत्वावधान में 'लोकतंत्र और भारतीय संविधान' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय एनएसएस प्रभारी डॉ अरविंद कुमार मिश्र ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए संविधान दिवस की प्रस्तावना, संविधान सभा के गठन इसके उद्देश्य और भारतीय संविधान के विविध



पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए सभी को संविधान दिवस की शुभकामनाएं दी तथा समकालीन समाज एवं संवैधानिक मूल्य पर विस्तार से चर्चा की और भारतीय संविधान एवं उससे जुड़े प्रमुख पहलुओं पर स्वयंसेवकों को एक नागरिक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करने हेतु और समाज एवं समुदाय को अपने नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने हेतु आह्वान किया। इस अवसर पर कार्यक्रम कार्यक्रम अधिकारी डॉ शैलेश यादव एवं डॉ आलोक कुमार मिश्र ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए राष्ट्र निर्माण में युवाओं के सहभागिता हेतु मार्गदर्शन करते हुए कार्यक्रम में संविधान दिवस पर अपने विचार व्यक्त किये। इसके पश्चात महाविद्यालय जनजातीय अध्ययन केंद्र के संयोजक डॉ विकास कुमार एवं समाजशास्त्र विभाग में सहायक प्राध्यापक डॉ विवेक कुमार द्वारा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संविधान मे प्रस्तावित नागरिक कर्तव्य पर विचार व्यक्त किए गए। कार्यक्रम में अविश सिंह, आदर्श मिश्र एवं राज सरोज इत्यादि स्वयंसेवको की सराहनीय भूमिका रही।

सीएमपी डिग्री कॉलेज में संविधान बोध का हुआ आयोजन

प्रयागराजस सीएमपी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के विधि विभाग के बी.ए. एलएल.बी. (ऑनर्स) पाठ्यक्रम की ओर से 26 नवम्बर को संविधान दिवस के अवसर पर 'संविधान बोध' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एलएल.बी. (ऑनर्स) और बी.ए. एलएल. बी. (ऑनर्स) के सभी सेमेस्टरों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

यह आयोजन प्राचार्य प्रो. अजय प्रकाश खरे की इस संकल्पना के अनुरूप था कि विधि शिक्षा विद्यार्थियों को कानून का ज्ञान देने



के साथ–साथ उनमें सहिष्णुता, गरिमा, स्वतंत्रता और न्याय जैसे संवैधानिक मूल्यों का विकास भी करे। लिखित प्रश्नोत्तरी में कुल 45 प्रश्न थे। इनमें संविधान सभा के सदस्यों और समितियों, सभा की बहसों के दौरान की गई उल्लेखनीय टिप्पणियों, महत्त्वपूर्ण तिथियों और संविधान निर्माण का मार्गदर्शन करने वाले सिद्धांतों को शामिल किया गया। इस अवसर पर संविधान दिवस पर केंद्रित राज्यसभा टीवी का विशेष कार्यक्रम भी दिखाया गया।

बी.ए. एलएल.बी. (ऑनर्स) पाठ्यक्रम की समन्वयक श्रीमती रेनू सिंह ने संविधान दिवस की शपथ ली और विद्यार्थियों को भी शपथ दिलाई। डॉ. अनुश्री पांडेय ने नेल्सन मंडेला और आर्थर चास्कलसन के प्रसंग से संविधानवाद की अवधारणा समझाई, श्री पीयूष कुमारेन्द्र ने भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा की और श्री हिमांशु उपाध्याय ने विधि समुदाय के भावी सदस्यों के रूप में विद्यार्थियों के सात दायित्वों पर प्रकाश डाला।

पुरातत्व निदेशालय में संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन एवं संकल्प ग्रहण

भारतीय संविधान हमारे अधिकारों का संरक्षक एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी–जयवीर

लखनऊ, संवाददाता। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में संविधान दिवस के अवसर पर आज उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व निदेशालय, लखनऊ में भारतीय संविधान के प्रति सम्मान एवं प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुये संविधान के उद्देशिका का प्रस्तावना का सामूहिक वाचन किया गया। पर्यटन मंत्री ने अपने संदेश में कहा है कि हमारा संविधान सिर्फ एक लिखित दस्तावेज ही नहीं बल्कि हमारे अधिकारों का संरक्षक और लोकतंत्र का सजग प्रहरी है। संविधान हमारे अधिकारों का संरक्षक होने के साथ ही समस्त नागरिकों के कल्याण की भावना को समेटे हुये है। निदेशक रेनू द्विवेदी ने निदेशालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वाचन कराते हुए संविधान में निहित आदर्शों एवं मूल्यों के अनुरूप आचरण करने तथा राष्ट्र की एकता, अखंडता, संप्रभुता और लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति निष्ठा बनाए रखने का संकल्प दिलाया। पर्यटन मंत्री ने कहा कि हमें संवैधानिक मूल्यों के प्रति आस्था व्यक्त करते हुये देश के निर्माण में जुट जाना चाहिए। संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित न्याय, स्वतंत्रता, समता एवं बंधुता के मूल सिद्धांतों को आत्मसात करने तथा अपने कर्तव्यों का निर्वहन संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई। इस अवसर पर निदेशालय के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

बदलाव ने स्कूल–कॉलेज के विद्यार्थियों के बीच शुरू किया 'बियॉन्ड द बाउल' अभियान

लखनऊ, संवाददाता। भिक्षावृत्ति में लगे लोगों के पुनर्वास और सामाजिक समावेशन की दिशा में काम करने वाली संस्था बदलाव ने गुरुवार को लखनऊ के राजाजीपुरम स्थित पायनियर मॉन्टेसरी स्कूल में 'बियॉन्ड द बाउल' अभियान की शुरुआत की। पहले सत्र में करीब 150 विद्यार्थी, शिक्षक और अन्य स्कूल कर्मचारी शामिल हुए।

संविधान दिवस पर मथुरा में गूंजा 'एक स्वर, एक संविधान' का संदेश

मुख्य आयोजन में छह हजार प्रतिभागियों ने किया प्रस्तावना का सामूहिक वाचन, जनपदभर के कार्यक्रमों में 2.14 लाख से अधिक लोगों की सहभागिता

मथुरा। संविधान दिवस पर मथुरा में भारतीय संविधान के मूल आदर्शों न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता का संदेश गूंज उठा। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में आयोजित 'एक स्वर, एक संविधान' कार्यक्रम में हजारों छात्र–छात्राओं, न्यायिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं एवं शिक्षकों ने संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन कर संवैधानिक मूल्यों को आत्मसात करने का संकल्प लिया। जनपदभर में आयोजित कार्यक्रमों में कुल लगभग 2,14,500 लोगों ने सहभागिता की। संस्कार पब्लिक स्कूल, महोली रोड, इंडस्ट्रियल एरिया मथुरा में आयोजित मुख्य कार्यक्रम की अध्यक्षता जनपद न्यायाधीश विकास कुमार ने की। कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव अनीता सिंह ने संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया, जिसके बाद हजारों प्रतिभागियों ने एक स्वर में प्रस्तावना दोहराई। सामूहिक वाचन के जरिए लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान के प्रति सम्मान व प्रतिबद्धता का संदेश दिया गया।

जनपद न्यायाधीश विकास कुमार ने संविधान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संविधान में निहित मूल्यों और आदर्शों को जीवन में अपनाना तथा अधिकारों के साथ नागरिक कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों को बढ़ती नशे की प्रवृत्ति और उसके शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करते हुए नशे से दूर रहने का आह्वान किया। युवाओं से अपनी ऊर्जा शिक्षा, खेल और रचनात्मक गतिविधियों में लगाने तथा समाज को नशामुक्त बनाने में योगदान देने की अपील की। कार्यक्रम में अपर जिला जज अजय पाल सिंह, अरविन्द कुमार यादव, अनुराग शर्मा, सुरेन्द्र प्रसाद, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नितिन कुमार, अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट रेलवे सूर्यभान कुमार वर्मा, अपर सिविल जज (सीनियर डिवीजन) सुरभि श्री गुप्ता, अदिति सिंह, सिविल जज (जूनियर डिवीजन) महिमा जैन, अतिरिक्त पीठासीन अधिकारी लाल बहादुर, बार एसोसिएशन अध्यक्ष राघवेन्द्र सिंह, सचिव मनोज शर्मा, जिला विद्यालय निरीक्षक राघवेन्द्र सिंह तथा संस्कार पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष आकाश सिंघल सहित न्यायिक अधिकारी, अधिवक्ता, शिक्षक और



छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

विद्यालयों में प्रतियोगिताएं, विजेता सम्मानित

राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देश पर जनपद के सभी विद्यालयों में संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन कराया गया। कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के बीच संविधान विषयक विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की जानकारी दी गई।

जनपद न्यायालय में भी हुई संगोष्ठी

जनपद न्यायालय परिसर में भी जनपद न्यायाधीश विकास कुमार की अध्यक्षता में संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें न्यायिक अधिकारियों, न्यायालय कर्मचारियों एवं अधिवक्ताओं ने सहभागिता की। जनपद न्यायाधीश ने संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया। संगोष्ठी में संविधान की महत्ता, लोकतांत्रिक व्यवस्था में न्यायपालिका की भूमिका तथा नागरिक अधिकारों और कर्तव्यों पर विचार–विमर्श किया गया।

मुख्य आयोजन स्थल पर लगभग छह हजार लोगों ने सहभागिता की, जबकि जनपद के विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में लगभग 2,08,500 लोग शामिल हुए।

सभी कार्यक्रमों के समापन पर राष्ट्रगान के साथ देश की एकता, अखंडता और संविधान के प्रति सम्मान का संदेश दिया गया। संविधान केवल दस्तावेज नहीं, बल्कि लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, राष्ट्र की एकता और अखंडता का आधार है। इसके आदर्शों को आचरण में अपनाना ही संविधान के प्रति सच्चा सम्मान है।

न्याय, समानता, स्वतन्त्रता एवं बन्धुत्व भारतीय संविधान का मूलः प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय 'परमहंस'

प्रयागराज। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गंगानाथ झा परिसर में राष्ट्रीय संविधान दिवस कार्यक्रम का आयोजन परिसर के गंगासभागार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिसर के निदेशक प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस" द्वारा की गई। उन्होंने उपस्थित परिसरीय सदस्यों को संविधान की प्रस्तावना एवं उद्देशिका का वाचन एवं संविधान के अनुपालन का शपथपाठ कराया।

उन्होंने भारतीय संविधान के प्रति सजग रहते हुए सभी से अपने कर्त्तव्यों का पालन करने का आह्वान किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने न्याय को स्वतन्त्रता, समता एवं बन्धुत्व का आधार बताया। संविधान के समक्ष आ रहीं वर्तमान चुनौतियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने धर्म को कर्त्तव्य का वाचक बताया तथा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने राष्ट्र धर्म के पालन को सर्वोच्च प्राथमिकता देने को प्रेरित करते हुए उन्होंने सजग न रहने पर देश के समक्ष आने वाले गम्भीर संकट के प्रति आगाह भी किया। महाकवि रामधारी सिंह दिनकर की कृति रश्मिरथी का उल्लेख करते हुए धर्म की व्याख्या करते हुए उन्होंने सभी को अपनी सेवा द्वारा भारत के संविधान की रक्षा एवं अनुपालन हेतु प्रेरित किया। उनके अनुसार संविधान की सीमा का आदर करते हुए



उसका अनुपालन ही देश को आन्तरिक एवं बाह्य चुनौतियों से रक्षित कर सकता है।

राष्ट्रीय संविधान दिवस के औचित्य को बताते हुए उन्होंने आज के दिवस को संविधान के तत्वों के प्रति जागरुकता लाने की भावना से आयोजित किया जाने वाला जागरुकता दिवस बताया तथा सभी से प्रेम एवं सौहार्द के साथ मिलजुलकर संविधान के दायरे में रहते हुए विकास की गति को बढ़ाने में सक्रिय योगदान करते रहने को प्रेरित किया।

इसके पूर्व कार्यक्रम के संयोजक एवं परिसर के सहनिदेशक प्रो. देवदत्त सरोदे ने धर्म को समाज को व्यवस्थित करने का आधार बताया। उनके अनुसार किसी भी देश के लिए दण्ड से शासन करने की अपेक्षा धर्म पूर्वक शासन करना अधिक प्रभावी होता है। देश के सम्मान को बनाये रखने के लिए आत्मानुशासन को उन्होंने सर्वश्रेष्ठ माध्यम बताया। उनके शब्दों में संविधान में दी गई व्यवस्था का समुचित पालन न करना देश के संविधान को सदैव संकट में डाल देता है। कश्मीर से पलायन, तमिलनाडु की घटना का उल्लेख करते हुए इन घटनाओं को उन्होंने संविधान के लिए संकट उत्पन्न करने वाला बताया। उनके अनुसार कश्मीर की घटना देश के संवैधानिक व्यवस्था को संकट में डालने वाली घटना थी। सभी को चेताते हुए उन्होंने संविधान की शक्ति को पहचानने का आह्वान किया एवं समयानुसार उचित निर्णय न लेने की स्थिति को संविधान अनुपालन के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बताया। कार्यक्रम में डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी, डॉ. अंजनी पुण्डरीक, डॉ. मंगलदेव त्रिपाठी, डॉ. श्यामसुन्दर पाण्डेय एवं राजेशकान्त तिवारी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी ने किया। इस अवसर पर प्रो. अपराजिता मिश्रा, डॉ. सुरेश पाण्डेय, डॉ. मोनाली दास, डॉ. शुभश्री दास, अंकित मिश्र, वरुण त्रिपाठी सहित समस्त अधिकारी, कर्मचारीगण एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे।

कोर में विद्युत सामान्य विद्युत आपूर्ति कार्यों हेतु दर अनुसूची पुस्तिका का विमोचन

प्रयागराज। रेलवे बोर्ड के 16.02.2026 को प्राप्त निर्देशों के अनुसार, केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन, प्रयागराज ने श्इलेक्ट्रिकल जनरल पावर सप्लाई वर्क्सश (विद्युत सामान्य विद्युत आपूर्ति कार्यों) के लिए एक व्यापक श्शेड्यूल ऑफ रेट्सश ैव्) तैयार किया है। भारतीय रेलवे में पहली बार श्इलेक्ट्रिकल जनरल पावर सप्लाई वर्क्सश के लिए ैव् तैयार किया गया है। अब तक एक मानकीकृत ैव् न होने के कारण, विभिन्न जोनल रेलवे में दरों और कार्य–प्रणालियों में काफी अंतर था, जिससे एस्टीमेट (अनुमान) और टेंडर तैयार करने तथा उन्हें अंतिम रूप देने में बहुत अधिक समय लगता था। यह ैव् दो खंडों (अवसनउमे) वाली एक पुस्तिका के रूप में है, जिसमें रेलवे के श्इलेक्ट्रिकल जनरल पावर सप्लाईश से जुड़े कार्यों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। इसमें आंतरिक और बाहरी विद्युत इंस्टॉलेशन, लाइटिंग, पंखे, न्है और चार्जर, एयर कंडीशनिंग और हीटिंग सिस्टम, केबल और ओवरहेड लाइन के काम, सबस्टेशन, कंट्रोल और प्रोटेक्शन सिस्टम, डम्ब सिस्टम, इससे जुड़े सिविल कार्य और सेवाओं को किराए पर लेने जैसी चीजें शामिल हैं। इसकी एक खास विशेषता यह है कि इसमें तकनीकी विनिर्देशों (जमबीदपबंस चमबपपिबंजपवदे) को स्पष्ट करने वाले विस्तृत व्याख्यात्मक नोट और श्मटेरियल सप्लाई रेट लिस्टश (सामग्री आपूर्ति दर सूची) अलग से दी गई है। इलेक्ट्रिकल और फाइनेंस विभाग की एक समर्पित टीम ने इस ैव् को तैयार करने के लिए कड़ी मेहनत की है। इसे 13 जोनल रेलवे, 14 राज्य विद्युत बोर्डों, ब्व्क, केंद्र और राज्य सरकार की एजेंसियों तथा न्है से प्राप्त दरों के संदर्भों और तकनीकी इनपुट की गहन जांच के बाद विकसित किया गया है। यह शेड्यूल विस्तृत तकनीकी और वित्तीय विश्लेषण के बाद तैयार किया गया है, जिसमें लागत में होने वाले बदलावों और नवीनतम कराधान ढांचे को भी शामिल किया गया है। इस दर अनूसूची को जारी किए जाने से पूर्व कोर मुख्यालय मे बैठक आयोजित कर इसका उद्देश्य, निर्माण पद्धति, लाभ तथा भारतीय रेल मे होने वाले कार्यो मे सुगमता के बार मे विस्तृत रूप से अवगत कराया गया तदुपरान्त इस श्शेड्यूल ऑफ रेट्सश को आज, यानी 26.11.2026 को, ब्व्क् के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार वर्मा द्वारा औपचारिक रूप से जारी किया गया। इस अवसर पर कोर के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री संजय सिंह नेगी, मुख्य विद्युत अभियंता/कार्य श्री अर्पण कुमार, उप मुख्य विद्युत अभियंता श्री आलोक बिहारी अग्रवाल और श्री कल्याण सिंह के साथ–साथ अन्य अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित थे। इस ैव् का व्यापक दायरा, मदों की एकसमान और मानकीकृत नंबरिंग, तथा कार्य के दायरे की स्पष्ट परिभाषा से भ्रम की स्थिति कम होगी, श्नॉन–शेड्यूलश (छै) मदों पर निर्भरता घटेगी, और एस्टीमेट तथा टेंडर दस्तावेजों को तैयार करने की प्रक्रिया तेज हो जाएगी। तकनीकी विनिर्देशों, सामग्री आपूर्ति दरों और संबंधित दिशानिर्देशों का एक ही संदर्भ दस्तावेज़ में उपलब्ध होने से समय और श्रमशक्ति की बचत होने की उम्मीद है। साथ ही, इससे ज़ोनल रेलवे और उत्पादन इकाइयों में कार्यों के निष्पादन में पारदर्शिता, मितव्ययिता और कार्यकुशलता को बढ़ावा मिलेगा।

सच्चे मानव हैं वही

(छप्पय)

त्याग कुपथ की राह मगन जो खुद मे रहते।
चुन चुन खरपतवार सदा मन निर्मल रखते।
दूर खड़ा अभिमान उन्हें बस देखा करता।
परहित की जो बात सदा सबसे है कहता।
करुणा, प्रेम–विवेक ही जिसकी निज पहचान है।
सच्चे मानव हैं वही जिस पर सबको नाज़ है।।

अंतर्मन के भाव जुबाँ चुप होकर कहती।
दफ़्न हो गए ख़्वाब मौन हो सरिता बहती।
मुखड़े पर मुस्कान बात सौ सौ कह जाते।
भीतर रख तूफान सुकूँ सबका ले आते।
नयनो के सैलाब से करे बात जो प्रेम की।
वही छाँव बनकर सदा रक्षा करते धूप की।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

नवयुग कन्या महाविद्यालय में 'संविधान दिवस' पर स्लोगन प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

लखनऊ। नवयुग कन्या महाविद्यालय में श्संविधान दिवसश के उपलक्ष्य में एक प्रेरणादायक 'स्लोगन प्रतियोगिता' का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में भारतीय संविधान के मूल्यों, मौलिक अधिकारों और नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना था। यह कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय के कुशल संरक्षण एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारियों के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। प्राचार्या महोदया ने छात्राओं को



संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेज नहीं, बल्कि देश की एकता, अखंडता और लोकतांत्रिक व्यवस्था की आधारशिला है। उन्होंने सभी छात्राओं को संविधान की प्रस्तावना में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की तीनों इकाइयों की स्वयंसेविकाओं ने अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में रसायन विज्ञान की विभागाध्यक्ष डॉक्टर सुनीता सिंह एवं बीएड विभाग की प्रवक्ता डॉक्टर दीपशिखा मौजूद रहीं। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा

स्लोगन प्रतियोगिता – प्रथम –अंकिमा देवी, द्वितीय –पूर्वी श्रीवास्तव, तृतीय – गुनी गुप्ता

सांत्वना –सुकृति मौर्य एवं पलक शर्मा

पोस्टर प्रतियोगिता –

प्रथम –अंजलि, द्वितीय –अंशिका, तृतीय –मनस्वी द्विवेदी

प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मकता और मौलिक विचारों के माध्यम से लोकतंत्र, मतदान के महत्व, महिला सशक्तिकरण और मौलिक कर्तव्यों पर अत्यंत प्रभावशाली व सार्थक स्लोगन प्रस्तुत किए। निर्णायक मंडल ने प्रस्तुतियों की मौलिकता, विषय–वस्तु की गहराई और संदेश की प्रभावशीलता के आधार पर सर्वश्रेष्ठ स्लोगनों एवं पोस्टर का चयन किया। निर्णायक मंडल द्वारा सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना की गई। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस पर डिप्टी सीएम ने किया पौधरोपण

लखनऊ, संवाददाता। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने आज विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस के अवसर पर पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने देश एवं प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत प्रत्येक व्यक्ति से अपनी मां के सम्मान में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाने की अपील की। प्रकृति हमारी अमूल्य धरोहर है। इसका संरक्षण करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। जल संरक्षण, वृक्षारोपण और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग हमारी जीवनशैली का हिस्सा बनना चाहिए। प्रत्येक नागरिक अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेकर धरती को स्वच्छ, हरित और प्रदूषण मुक्त बनाने में योगदान दे।

उत्तर मध्य रेलवे

ई-नीलामी सूचना

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज रेलवे बोर्ड के पत्र दिनांक 13.06.2022 के अंतर्गत प्रयागराज मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर पे & यूज टॉयलेट एवं लेविंग ऑफ SLR लेने के अनुबंध के लिए आईआरईपीएस के ई-नीलामी मॉड्यूल के माध्यम से बोलियां आमंत्रित करता है।

पे & यूज टॉयलेट

क्र. सं.	पे & यूज टॉयलेट का विवरण	अवधि	ई-आक्शन कैटलाग संख्या	ई-आक्शन प्रारंभ तिथि एवं समय
1	शंकरगढ़ रेलवे स्टेशन पर BOT आधारित डीलक्स पे & यूज शौचालय	15 वर्ष	PnU-PRYJ-SRJ-GO	30.11.2026 को 12:00 बजे
2	नॉर्थ-ईस्टर्न रेलवे स्टेशन के PF-2/3 पर पे & यूज टॉयलेट (O&M आधारित)	03 वर्ष	PnU-PRYJ-SRJ-GO	30.11.2026 को 12:00 बजे

SLR

S. N.	Compartment	Train No.	CC (Intones)	From-To	Frequency (In a week)	E-Auction Catalogue No.	E-Auction Start Date & Time
1	RSLR	12275	3.9	PRYJ-NDLS	04 days	PRYJ-PRCL-26-12	08.12.2026, 11.30 Hrs
2	FSLR	12033	3.9	CNB-NDLS	03 days	PRYJ-PRCL-26-12	08.12.2026, 11.30 Hrs
3	FSLR	22443	3.9	CNB-BDTS	01 days	PRYJ-PRCL-26-12	08.12.2026, 11.30 Hrs
4	FSLR	20437	3.9	PRYJ-UDN	01 days	PRYJ-PRCL-26-12	08.12.2026, 11.30 Hrs
5	RSLR	18204	3.9	CNB-DURG	02 days	PRYJ-PRCL-26-12	08.12.2026, 11.30 Hrs

इच्छुक बोलीदाता अधिक जानकारी के लिए, ई-नीलामी में भाग लेने के लिए आधिकारिक वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जा सकते हैं। 1. बोलीदाताओं, जो ई-नीलामी मॉड्यूल में भाग लेना चाहते हैं, के पास वैध डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र (डीएससी) होना चाहिए और इसे भारत सरकार के प्रमाणन प्राधिकरण (सीसीए) के नियंत्रक के किसी भी प्रमाणित प्राधिकारी से प्राप्त किया जा सकता है, इसका विवरण www.cca.gov.in से प्राप्त किया जा सकता है। 2. बोलीदाताओं को आईआरईपीएस (वाणिज्यिक नीलामी मॉड्यूल) में खुद को ऑनलाइन पंजीकृत कराना होगा। 3. एकमुश्त पंजीकरण शुल्क रु. 10000.00/- और लागू जीएसटी (गैर-वापसी योग्य) को किसी भी व्यावसायिक नीलामी में भाग लेने से पहले ऑनलाइन भुगतान करना होगा। 4. इस ई-नीलामी के संबंध में अधिक जानकारी, आवश्यकता और विभिन्न पहलुओं के लिए, इच्छुक बोलीदाताओं को http://www.ireps.gov.in/epsn/jsp/common/learningCenter.jsp पर जाने की सलाह दी जाती है। 5. अनिम मनी डिपॉजिट (ईएमडी) नीलामी के दौरान ऑनलाइन जमा की जाने वाली कुल संविदात्मक बोली मूल्य का 10% सफल बोलीदाता की ईएमडी सुरक्षा जमा के रूप में रखी जाएगी। 6. रेल प्रशासन इन गाड़ियों के आगे रहने/बंद होने या नई गाड़ी सेवाओं के शुरू होने के आधार पर किसी भी समय (या कोई निर्णय लेने के लिए) इन अनुबंधों को समाप्त करने का पूर्ण और पूर्ण अधिकार सुरक्षित रखता है। 7. सफल बोली लगाने वाले को समय-समय पर भारत सरकार द्वारा लगाई जीएसटी का भुगतान करना होगा। रेल प्रशासन इसके लिए उत्तरदाई नहीं होगा। 2658/26 (AS)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

सम्पादकीय.....

भाजपा-अकाली पुनर्मिलन

पिछले कुछ महीनों से पंजाब व दिल्ली में भाजपा व अकाली दल की तरफ से जिस तरह की बयानबाजियां और राजनीतिक हलचल सामने आ रही थी, उसके निहितार्थ स्पष्ट ही थे। जो संकेत दे रहे थे कि पंजाब में विधानसभा चुनाव से पहले शिरोमणि अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी का फिर एक बार साथ आना लगभग तय ही है। वर्ष 2027 के आसन्न पंजाब विधानसभा चुनाव से ठीक पहले इन दोनों दलों का साथ आने का फैसला बताता है कि यह गठबंधन सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी और मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस को चुनौती देने के ठोस प्रयास कर कर रहा है। इस गठबंधन की घोषणा गुरु नानक देव जी के प्रकाश उत्सव के मौके पर की गई है, जिसके ऐतिहासिक और प्रतीकात्मक, दोनों ही तरह के महत्व हैं। यहां उल्लेखनीय है कि भारतीय जनता पार्टी और अकाली दल ने पहली बार तीन दशक पहले भी हाथ मिलाया था। उस समय इस गठबंधन को आतंकवाद से उबरते पंजाब में हिंदू–सिख एकता के प्रतीक के रूप में देखा जाता था। कालांतर दोनों दलों के रिश्तों में खटास उस समय आई, जब केंद्र सरकार द्वारा लाए गए तीन विवादित कानूनों के विरोध में व्यापक जनाक्रोश दिखा। किसानों के आक्रोश के चलते अकाली दल को अपना जनाधार खिसकता नजर आया था। कालांतर वर्ष 2020 में अकाली दल ने भाजपा नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से नाता तोड़ लिया था। बहरहाल, इस गठबंधन की घोषणा के बाद जिस तरह के बयान गृहमंत्री अमित शाह की तरफ से आए हैं, वह दर्शाता है कि पिछले एक दशक में शिरोमणि अकाली दल के सिमटते जनाधार के बावजूद इस क्षेत्रीय दल को पर्याप्त महत्व दिया जा रहा है। अमित शाह ने गठबंधन की घोषणा के बाद कहा कि अकाली दल पंजाब में बड़े भाई की भूमिका में रहेगा। साथ ही यदि गठबंधन की जीत हुई तो मुख्यमंत्री पद अकाली दल को ही मिलेगा। वैसे यह एक हकीकत है कि इस गठबंधन के बावजूद पंजाब के राजनीतिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल देना आसान भी नहीं होगा। वैसे आज भी शिरोमणि अकाली दल पर साल 2025 की बेअदबी की घटनाओं और उसके बाद हुए राज्यव्यापी विरोध–प्रदर्शनों का बोझ है। जिसने उस समय अकाली सरकार को हिलाकर रख दिया था। वहीं, केंद्र में सत्ताधारी भाजपा के खिलाफ तीन कृषि कानूनों को लेकर उपजे गुस्से को पूरी तरह समाप्त नहीं समझ लेना चाहिए। तब किसान काफी नाराज हुए थे और उन्होंने दिल्ली की सीमाओं पर पूरे एक साल तक आंदोलन किया था। अंततरू नवंबर 2021 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इन कानूनों को वापस लेने की घोषणा की थी। लेकिन इसके बावजूद आगामी चुनावों में भाजपा को कोई सकारात्मक प्रतिसाद पंजाब की जनता की तरफ से नहीं मिला था। तीन माह बाद, 2022 के विधानसभा चुनावों में भाजपा को सिर्फ दो सीटों में ही संतोष करना पड़ा था। कमोबेश शिअद की स्थिति भी कोई अच्छी नहीं रही थी। उसे तब सिर्फ तीन ही सीटें मिली थीं। निस्संदेह, यह अकाली दल का अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन था। इसके विपरीत आम आदमी पार्टी ने तब रिकॉर्ड जीत दर्ज की थी। बहरहाल, भाजपा और शिअद के इस पुनर्मिलन से दो मुख्य सवाल खड़े होते हैं। क्या इस गठबंधन के पीछे पंजाब के उन्नयन को लेकर कोई साझा विजन है? या ये फिर महज चुनावी गणित ही है? सवाल यह भी है कि क्या यह गठबंधन दोनों दलों के लिये लाभदायक साबित होगा? निस्संदेह, आज पंजाब गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसमें आर्थिक दबाव भी एक बड़ा कारण है। राज्य गंभीर बेरोजगारी की चपेट में है। वहीं राज्य में नशीले पदार्थों का बढ़ता कारोबार व सेवन एक गंभीर चुनौती है। हालांकि, भाजपा ने पंजाब में नशे के खात्मे को अपनी प्राथमिकता बताया है और नशामुक्त पंजाब का रोडमैप भी सार्वजनिक किया है। जब पंजाब के राज्यपाल को कहना पड़ता है कि यहां गोलियां पटाखों की तरह चलती हैं, तो गैंगस्टरों के पसरे आतंक को समझा जा सकता है। शिअद और भाजपा के इस गठबंधन के लिये असली इम्तिहान यह भी होगा कि वे मतदाताओं को कैसे यकीन दिलाएंगे कि यह पंजाब के लिये सबसे बेहतर विकल्प है?

सौरव दास को रोककर सरकार ने की गलती

डॉ. दीपक पाचपोर

नीरव मोदी और विजय माल्या जैसे भगोड़ों का नाम लेकर सौरव दास ने मोदी सरकार पर बड़ा हमला बोला है, क्योंकि इन दोनों के समेत कुछ और लोग देश के बैंकों से पैसे चोरी कर के विदेश चले गए और सरकार इन्हें नहीं रोक पाई।

नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार अपने विरोधियों और आलोचकों से कितना घबराती है, इसके प्रमाण बार–बार सामने आ रहे हैं। ताजा उदाहरण सौरव दास का है। कॉकरोच जनता पार्टी के प्रवक्ता सौरव दास को ब्रिटेन में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के छात्रसंघ ने लेक्चर देने के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन उन्हें एयरपोर्ट पर रोक दिया गया। सोमवार देर रात की इस घटना पर दिल्ली एयरपोर्ट से ही एक वीडियो बनाकर सौरव दास ने कहा कि श्मैं दिल्ली एयरपोर्ट पर हूं। मेरी फ्लाइट दिल्ली से लंदन की एक बजे रात को थी। मैं ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी जा रहा था, वहां यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट यूनियन ने मुझे बुलाया था। जैसे ही मैं इमिग्रेशन चेक पर गया तब मुझे पता चला कि मेरा पासपोर्ट, फ्लैग कर दिया गया है। कायर सरकार ने देश से बाहर जाने से रोक दिया।श बता दें कि पासपोर्ट फ्ल्लैग करने का आमतौर पर मतलब है कि इमिग्रेशन या सुरक्षा एजेंसियों के डेटाबेस में किसी पासपोर्ट के साथ एक खास अलर्ट या निशान जोड़ देना। अगर किसी का पासपोर्ट फ्ल्लैग किया गया हो तो इमिग्रेशन के वक्ध्त पासपोर्ट की स्कैनिंग में यह दिख जाता है, जिसका मतलब होता है कि उस शख्ब्स की अतिरिक्त जांच या उसके संबंध में कोई कार्रवाई करने की जरूरत है। मतलब सौरव दास के पासपोर्ट में पहले ही कोई निशान गृहमंत्रालय की तरफ से जोड़ दिया गया, और इमिग्रेशन पर पहुंच कर उन्हें इसकी जानकारी हुई। अंतरराष्ट्रीय यात्रा के दौरान देश में प्रवेश करने या बाहर जाने पर पासपोर्ट और यात्रा दस्तावेजों की आधिकारिक जांच इमिग्रेशन या आव्रजन काउंटर पर की जाती है। आमतौर पर अपराधियों या संदिग्ध व्यक्तियों के लिए इस तरह के पासपोर्ट फ्लैग करने का काम किया जाता है, ताकि कानूनी शिकंजा कसा जा सके और वह व्यक्ति विदेश न भाग पाए। लेकिन सौरव दास के साथ ऐसा सलूक क्यों हुआ। उनकी किस गतिविधि के कारण उनके पासपोर्ट पर अलर्ट जारी किया गया, इसकी जानकारी सरकार की तरफ से नहीं मिली है। अलबत्ता सौरव दास ने यह सवाल जरूर उठाया है कि श्सरकार को क्या डर है कि एक युवा पढ़े–लिखे लोगों के बीच जा रहा है। काश मैं नीरव मोदी और विजय माल्या होता, मैं करोड़ों रुपये बैंकों से लूट लेता। सौरव दास ने यह भी कहा कि ये सरकार कॉकरोच मूवमेंट से डरती है। ये सब करके क्या होगा। लगता है कि डर जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं होगा। नीरव मोदी और विजय माल्या जैसे भगोड़ों का नाम लेकर सौरव दास ने मोदी सरकार पर बड़ा हमला बोला है, क्योंकि इन दोनों के समेत कुछ और लोग देश के बैंकों से पैसे चोरी कर के विदेश चले गए और सरकार इन्हें नहीं रोक पाई। जिस तरह सौरव दास का पासपोर्ट फ्लैग किया गया, वैसा ही काम ऐसे लुटेरों के लिए क्यों नहीं किया गया। भले नीरव मोदी और विजय माल्या को भागे हुए कई साल बीत चुके हैं, लेकिन उनका इस तरह जिक्र अब भी आना यह जाहिर कर रहा है कि इस देश का युवा कुछ भूला नहीं है। सीजेपी के संस्थापक अभिजित दिपके ने भी मोदी सरकार पर हमला बोलते हुए लिखा है कि क्या सौरव के पासपोर्ट में कोई गड़बड़ी है? उनका पासपोर्ट तो 2019 में इसी सरकार ने जारी किया था। सात साल तक उन्हें कोई गड़बड़ी नहीं दिखी, लेकिन सीजेपी के बनने और सौरव के उसका एक प्रमुख चेहरा बन जाने के बाद अचानक उन्हें इसमें गड़बड़ी कैसे दिख गई? वहीं इस संबंध में सीजेपी की कानूनी सलाहकार रत्ना सिंह ने एक्स पर लिखा कि– सौरव और मुझे दोनों को ऑक्सफोर्ड यूनियन ने आमंत्रित किया था। कुछ दिन पहले मेरा वीजा रिजेक्ट कर दिया गया था। इसे फिर भी स्वीकार किया जा सकता था, क्योंकि इसमें सरकार का कोई सीधे तौर पर हस्तक्षेप नजर नहीं आ रहा था। हालांकि, अब जो हुआ है, वह बिल्कुल यकीन करने लायक नहीं है। यह शर्मनाक है कि इस देश के युवाओं को निशाना बनाया जा रहा है। सीजेपी से जुड़े लोगों के ये बयान जाहिर कर रहे हैं कि मोदी सरकार को अब कई और कठिन सवालों का सामना करना पड़ेगा। इसी महीने हैदराबाद में भारत समिट के भी कुछ वक्ताओं को मोदी सरकार ने इसी तरह वीजा रद्द करके देश आने से रोक दिया था। इनमें नॉर्वे की पत्रकार हेले लिंग भी शामिल थीं। हेले लिंग ने इसके बाद सोशल मीडिया पर मोदी सरकार की कड़ी आलोचना की थी। अगर हेले लिंग हैदराबाद आकर भाषण देकर चली जातीं तो ज्यादा लोगों को इसका पता भी नहीं चलता। लेकिन उन्हें रोककर सरकार ने इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय सुर्खियों का हिस्सा बना दिया था। ठीक यही काम अब सौरव दास के मामले में हुआ है। अब अगर वो देश में बैठकर इंटरनेट के जरिए ऑक्सफोर्ड के युवाओं को संबोधित करेंगे तो उसका व्यापक असर देखने मिल सकता है। सरकार याद करे कि कॉकरोच जनता पार्टी को अभिजित दिपके ने अमेरिका में बैठे–बैठे बनाया था, क्योंकि उन्हें मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की टिप्पणी से ठेस पहुंची थी। सोशल मीडिया पर उन्होंने एक आंदोलन शुरु किया था और देखते ही देखते यह देश के कोने–कोने में पहुंच गया। दिल्ली के जंतर–मंतर पर सीजेपी के एक आह्वान पर पेपर लीक के खिलाफ युवा जुट गए थे। फिर कुछ छात्र संगठनों ने भी पेपर लीक के खिलाफ आंदोलन को आगे बढ़ाया। धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा मोदी सरकार को करवाना पड़ा। फिर चुनाव चोरी के खिलाफ सीजेपी ने मुहिम आगे बढ़ाई। जंतर–मंतर को सरकार ने प्रदर्शन स्थलों की सूची से हटाया तो सौरव दास और आशुतोष रांका वहां तिरंगा लेकर पहुंच गए, जिस वजह से उन्हें जेल हुई और बाद में सशर्त जमानत हुई।

संविधान का मंत्र जाप, संसद के गले में फांसी!

राजेन्द्र शर्मा

विडंबना का इससे पैना उदाहरण मिलना मुश्किल है। देश संविधान दिवस मनाने की जोर–शोर से तैयारियां कर रहा है। मोदी सरकार ने खुद ही संविधान के संबंध में आधिकारिक रूप से यह नया दिवस मनाने की परंपरा शुरू करायी है और इस बात की याद दिलाने में वह कभी नहीं चूकती है। भारतीय संविधान के उत्सव के पालन की यह नयी परंपरा डाले जाने से पहले तक, भारतीय संविधान के लागू किए जाने के दिन, 26 जनवरी का गणतंत्र दिवस के रूप में और राष्ट्रीय परेड के साथ पालन किए जाने को, संविधान के प्रति निष्ठड्ढा जताने के लिए काफी समझा जाता था। बहरहाल, इस बार संविधान दिवस के मौके पर जो कुछ हो रहा है, उससे तो ऐसा लगता है कि मोदी सरकार ने डा. अंबेडकर के संविधान को एक शासकीय ईवेंट की भेंट चढ़ाकर, उससे ज्यादा से ज्यादा पूजा की एक मूर्ति तक सीमित कर, निपटाने का मन बना लिया था। देश ने अब तक जिंदा चीजों को स्मारक बनाकर निपटाने के इस पैंतरे को बखूबी पहचान लिया है। 2014 में संसद की चौखट पर माथा टेकने के बाद, तब के संसद भवन के साथ मोदी ने क्या किया है, सब की आंखों के सामने हैबहरहाल, इस बार के संविधान दिवस के मौके पर गंभीरता से प्रश्न उठ रहे हैं कि क्या इस बार संसद का शीतकालीन सत्र होगा भी या नहीं? और ये सवाल सिर्फ इसलिए खड़े नहीं हुए हैं कि जहां सामान्य परंपरा के अनुसार, 26 नवंबर को संविधान दिवस के पालन के मौके तक संसद का शीतकालीन सत्र शुरू हो चुका होना चाहिए था, जो क्रिसमस से पहले ही पूरा हो जाया करता है, इस बार इस सत्र का शुरू होने तो दूर रहा, सत्र की शुरूआत का नोटिस तक नहीं जारी हुआ है, स्थापित परंपरा के अनुसार जिसके कम से कम चौदह दिन के बाद सत्र शुरू होता है। लेकिन, बात सिर्फ शीतकालीन सत्र में विलंब होने की नहीं है। मुद्दा यह भी है कि शीतकालीन सत्र बुलाने का नोटिस इसलिए जारी ही नहीं हो सकता है कि, इससे पहले का मानसून सत्र, 13 अगस्त को वंदे मातरम के सभी अंतरों के गाए जाने की रस्म पूरी करने के साथ अनिश्चित काल के लिए स्थगित तो किया गया था, लेकिन अब तक औपचारिक रूप से उसका सत्रावसान ही नहीं हुआ है। मानसून सत्र के सत्रावसान के बिना, अगले सत्र के बुलाए जाने का नोटिस जारी किया ही नहीं जा सकता है। 13 अगस्त को अनिश्चित काल के लिए स्थगित किए जाने के बाद, लगभग सौ दिन तक सत्रावसान ही नहीं किया जाना, अपने आप में एक रिकार्ड है जो मोदी सरकार ने बनाया है। लेकिन, असली मुद्दा यह है कि यह कुख्यात रिकार्ड मोदी सरकार ने क्यों बनाया है? इसी साल, बजट सत्र के आखिर में मोदी सरकार ने महिला आरक्षण के लागू किए जाने का रास्ता बनाने की आड़ में, परिसीमन का दरवाजा खोलने के लिए जो 131वां संविधान संशोधन विधेयक पेश किया था, पर्याप्त सहमति और समर्थन के अभाव में 17 अप्रैल को लोकसभा में पराजित हो गया था। प्रकटतरू सरकार के संविधान संशोधन पारित कराने के लिए आवश्यक दो–तिहाई बहुमत से बहुत पीछे होने के बावजूद, जैसा कि मोदी सरकार ने कायदा ही बना लिया है, उसने विपक्ष के साथ संबंधित मुद्दों पर खुला संवाद करने तथा विपक्ष की आशंकाओं तथा चिंताओं के निराकरण के लिए मिलकर समाधान खोजने का कोई प्रयास करना तो दूर, देश की संसदीय राजनीति में भारी फेर–बदल करने के इस विचार पर एक सर्वदलीय बैठक तक बुलाना जरूरी नहीं समझा था। इसके बजाए, उसने विपक्ष की कतारों में तोड़–फोड़ के जरिए ही, संसद में अपने साधारण बहुमत को, दो–तिहाई बहुमत में तब्दील करने की कोशिश की थी, जिसने विपक्ष की आशंकाओं को और भी बढ़ा दिया और संशोधन प्रस्ताव गिर गया। इसके बाद मोदी सरकार ने तीन विधेयकों के उस पैकेज को ही वापस ले किया था, जिसके हिस्से के तौर पर उक्त संविधान संशोधन विधेयक पेश किया गया था। मोदी सरकार के लिए संसद का मानसून सत्र और भी खराब साबित हुआ। परीक्षा प्रणाली में भ्रष्टड्ढाचार व गंभीर गड़बडियों की चिंताओं से शुरू होकर, युवाओं की शिक्षा, रोजगार तथा अपनी बात कहने की आजादी तक की चिंताओं की अभिव्यक्ति में रूप में, कॉकरोच जनता पार्टी तथा वामपंथी छात्र संगठनों के माध्यम से जंतर–मंतर पर केंद्रित हुए जेन जी के शांतिपूर्ण तथा पूरी तरह से संवैधानिक आंदोलन को कुचलने की अपनी कोशिशों में, सरकार को मुंह की खानी पड़ी। उसे न सिर्फ हमारे राज में इस्तीफे नहीं होते के अपने तानाशाहाना हठ को छोड़कर, शिक्षा मंत्री का इस्तीफा लेना पड़ा, बल्कि अपने शासन की तेजी से गिरती साख को बचाने के लिए, खुद प्रधानमंत्री को जेन जी से उसकी भाषा में अपने मन की बात करने की हास्यास्पद कोशिशें तक करनी पड़ीं। पूरा मानसून सत्र इसी मांग पर खींच–तान में निकल गया कि इस सत्र के पहले दिन, युवाओं के संसद मार्च पर पुलिस ने जो बर्बरता की थी, उस पर केंद्रीय गृहमंत्री जवाब दें, लेकिन गृहमंत्री तथा प्रधानमंत्री भी, पूरे सत्र के दौरान एक बार भी संसद में नहीं आए। लेकिन, मानसून सत्र के अनिश्चित काल के लिए स्थगन के बाद गुजरे करीब सौ दिन, सरकार के लिए और भी मुश्किलों भरे रहे हैं। इस दौरान, मतदाता सूचियों के विशेष पुनरीक्षण या एसआइआर के नाम पर, ज्ञानेश कुमार के नेतृत्व में चुनाव आयोग द्वारा थोक के हिसाब से और टार्गेटेड तरीके से महिलाओं तथा अल्पसंख्यकों समेत, गरीब तथा कमजोर तबके के लोगों का मताधिकार छीने जाने की सचाई, खुलकर सामने आ गयी। प. बंगाल, उत्तराखंड, झारखंड, तेलंगाना, कर्नाटक आदि राज्यों में अल्पसंख्यकों के मताधिकार पर फार्म–7 आदि के जरिए, सत्ताधारी भाजपा के पक्ष में टार्गेटेड हमलों की लगातार आती खबरों के बाद, जब देश की राजधानी दिल्ली में 2025 के विधानसभा चुनाव की मतदाता सूचियों से एक–तिहाई से ज्यादा मतदाताओं के नाम काटे जाने और इससे भी बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम तार्किक विसंगति के नाम पर विवादित सूची में डाले जाने के बाद, लोगों का विक्षोभ उबाल पर पहुंच गया। तभी इंडियन एक्सप्रैस तथा अन्य प्रकाशनों के भी खुद चुनाव आयुक्तों के बीच असहमतियों समेत, सूची में नाम हटाए जाने की व्यवस्था के पूरी तरह से केंद्रीकृत किए जाने तथा मनमाने तरीके से संचालित किए जाने के भंडाफोड़ों ने लोगों के गुस्से को विस्फोट का रूप दे दिया, जिसे एक ओर विपक्ष और दूसरी ओर युवा पीढ़ी तथा उसके एक हिस्से की अभिव्यक्ति के रूप में कॉकरोच जनता पार्टी ने सड़कों पर प्रदर्शनों का रूप दे दिया। इन प्रदर्शनों को हर कीमत पर दबाने की अपनी कोशिश में, मोदी सरकार ने इसी धारणा को और पुख्ता करने का ही काम किया कि सत्ताधारी पार्टी तथा उसके सहयोगी दल, चुनाव आयोग की मदद से, जनतांत्रिक व्यवस्था से चुनावों को ही चुराने की कोशिश कर रहे हैं। इसी संदर्भ में परिसीमन के जरिए, संसदीय राजनीति का भूगोल ही बदलने की मौजूदा सत्ताधारियों की अति–उत्सुकता, इसके पीछे सत्ता पर अपना शिकंजा स्थायी करने के जरिए, चुनाव और जनतंत्र को ही बेमानी बनाए जाने के खेल की ओर इशारा करती है। प्रतिनिधित्व के असंतुलन को दूर करने के नाम पर, यह कसरत देश के राज्यों के बीच ताकतों के संतुलन को बुनियादी तौर पर बदलने और सत्तारूढ़ संघ–भाजपा से प्रायरू दूरी बनाए रहे दक्षिण का राजनीतिक वजन तुलनात्मक रूप से घटाने काम तो करेगी ही, इसके साथ ही यह सत्ताधारियों के मन–माफिक चुनाव क्षेत्रों की काट–छांट के जरिए मतदाताओं की काट–छांट के जरिए, एसआइआर से शुरू हुए सत्ताधारियों के मनमाफिक मतदाता समूह जुटाने के काम को और भी आगे ले जाएगी। जम्मू–कश्मीर तथा असम में हुए परिसीमन का अनुभव, इन आशंकाओं की जोरदार तरीके से पुष्टि करता है। जाहिर है इस खेल का विरोध तेजी से बढ़ रहा है।

मध्य शक्तियों के उदय की चर्चा, भारत की भूमिका

अरुण कुमार डनायक

जनवरी 2026 में दावोस में आयोजित विश्व आर्थिक मंच की बैठक में कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने मध्य शक्तियों को एकजुट होकर काम करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा था, श्मध्य शक्तियों को एकजुट होना होगा, क्योंकि यदि वे निर्णय लेने की मेज पर नहीं हैं, तो दूसरे उनके भविष्य का फैसला करेंगे। कार्नी का यह वक्तव्य केवल कूटनीतिक सलाह नहीं, बल्कि बदलती वैश्विक व्यवस्था की वास्तविकता को रेखांकित करता है। अमेरिका और चीन जैसी महाशक्तियां अपने आर्थिक, सैन्य और तकनीकी प्रभाव से दूसरे देशों पर दबाव बना रही हैं। ऐसे में कनाडा, भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, इंडोनेशिया और जापान जैसे देशों के सामने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति और राष्ट्रीय हितों की रक्षा की चुनौती है। कार्नी अमेरिका के विरुद्ध नया गुट बनाने के बजाय समान हितों वाले देशों के बीच व्यापार, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, महत्वपूर्ण खनिजों और वैश्विक संस्थाओं में सुधार के लिए सहयोग बढ़ाने पर जोर देते हैं, ताकि वैश्विक निर्णयों में उनकी भागीदारी प्रभावी हो सके। मध्य शक्ति की अवधारणा के अंतर्गत ऐसे देश आते हैं, जो महाशक्तियों जैसी प्रभुत्वकारी क्षमता न रखते हुए भी अपनी आर्थिक, भौगोलिक और कूटनीतिक सामर्थ्य से वैश्विक निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। भारत की बहु–संरेखण नीति इसी सोच को दर्शाती है। वह राष्ट्रीय हितों के अनुरूप विभिन्न शक्ति–समूहों से सहयोग करता है। मध्य शक्तियों के सहयोग की यह बहस गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्वतंत्र विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भावना की याद दिलाती है। मध्य शक्तियों की कोई सर्वमान्य सूची नहीं है और उनके राजनीतिक, आर्थिक तथा सुरक्षा संबंधी हित भी अलग–अलग हैं। जापान और दक्षिण कोरिया की सुरक्षा अमेरिका से जुड़ी है, भारत रणनीतिक स्वायत्तता को प्राथमिकता देता है, जबकि ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका विकासशील देशों के हितों पर जोर देते हैं। कनाडा और जर्मनी भी अपनी निर्भरता पर पुनर्विचार कर रहे हैं। इसलिए इनके लिए स्थायी राजनीतिक या सैन्य गठबंधन के बजाय साझा हितों पर मुद्दा–आधारित सहयोग अधिक व्यावहारिक है। इस संदर्भ में अमेरिका, चीन और रूस की स्थिति भी महत्वपूर्ण है। चीन आर्थिक और सैन्य रूप से तेजी से उभरा है। आर्थिक असंतुलन और पड़ोसी देशों से अविश्वास जैसी चुनौतियों के बावजूद वह वैश्विक व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यूक्रेन युद्ध और पश्चिमी प्रतिबंधों से दबाव के बावजूद रूस की परमाणु शक्ति, ऊर्जा संसाधन और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता उसे प्रभावशाली बनाए हुए हैं। वहीं, अमेरिका का सैन्य और वित्तीय प्रभाव अब भी व्यापक है, हालांकि चीन की बढ़ती शक्ति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस बहस में भारत की स्थिति विशिष्ट है। विशाल जनसंख्या, बड़ी अर्थव्यवस्था, परमाणु क्षमता और व्यापक बाजार के साथ उसकी भौगोलिक स्थिति तथा पश्चिमी देशों और ग्लोबल साउथ से संवाद की क्षमता उसे विशेष स्थान देती है। 2023 में जी–20 की अध्यक्षता के दौरान अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्यता दिलाने और विकासशील देशों के मुद्दों को प्रमुखता देने में भी भारत ने अहम भूमिका निभाई। लेकिन मुख्य प्रश्न है कि क्या भारत इस अवसर को पहचान रहा है? 13 अक्टूबर 2026 को नई दिल्ली में आयोजित ब्लूमबर्ग न्यू इकानॉमी फोरम में विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारत को श्मिडिल पावरश्च या मध्य शक्ति कहे जाने पर अपनी असहजता व्यक्त की। उन्होंने भारत को केवल मध्य शक्ति मानने के बजाय विभिन्न वैश्विक शक्ति–समूहों के बीच स्थित एक प्रभावशाली शक्तिकृश्पावर इन द मिडिलश्चकृके रूप में प्रस्तुत किया। जयशंकर के अनुसार, भारत की विशाल जनसंख्या और लगभग चार ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था उसे पारंपरिक मध्य शक्ति की श्रेणी से आगे रखती है। यह भारत की बढ़ती सामर्थ्य और स्वतंत्र पहचान की आकांक्षा दर्शाता है। लेकिन विशिष्ट पहचान बनाना और वैश्विक नेतृत्व हासिल करना अलग बातें हैं। श्पावर इन द मिडिलश्च का अर्थ यदि विभिन्न शक्ति–समूहों के बीच सेतु बनना और देशों को सशक्त करना है, तो यह भारत की सार्थक भूमिका हो सकती हैय अन्यथा वह सामूहिक नेतृत्व का अवसर खो सकता है। मध्य शक्तियों के बीच सहयोग की राह आसान नहीं है। भारत और चीन के बीच सीमा विवाद है, वहीं जापान और चीन के संबंधों में सुरक्षा संबंधी तनाव हैं। भारत के अनेक देशों के साथ हाल के वर्षों में गंभीर कूटनीतिक मतभेद भी रहे हैं। ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका की विकास संबंधी प्राथमिकताएं यूरोपीय देशों से अलग हो सकती हैं। इसलिए इन देशों को किसी एक वैचारिक आधार पर एकजुट करना संभव नहीं होगा। लेकिन सहयोग के लिए हर मुद्दे पर सहमति आवश्यक नहीं है। सुरक्षा संबंधों में भिन्नता रखने वाले देश भी व्यापार और प्रौद्योगिकी में साझेदारी कर सकते हैं। जलवायु नीति पर अलग–अलग दृष्टिकोण रखने वाले देश ऊर्जा सुरक्षा और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में साझा पहल कर सकते हैं। क्वाड, ब्रिक्स और दोनों आर्थिक–परिवहन गलियारों जैसे मंच सहयोग की नई संभावनाएं खोलते हैं। मध्य शक्तियों का उद्देश्य महाशक्तियों के बीच संतुलन बनाना, संवाद बढ़ाना और वैश्विक संस्थाओं को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण बनाना है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की 1945 की सत्ता–संरचना आज की राजनीतिक और आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करती। इसमें सुधार के लिए मध्य शक्तियां मिलकर प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं। भारत के सामने चुनौती अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने की नहीं, बल्कि उसे अंतरराष्ट्रीय सहयोग और विश्वास में बदलने की है। इसके लिए कुछ प्राथमिकताएं स्पष्ट हैं। ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और इंडोनेशिया के साथ मिलकर ग्लोबल साउथ की साझा आवाज को व्यापार, जलवायु न्याय, तकनीक और वैश्विक संस्थाओं में उचित प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों पर मजबूत करना होगा। कनाडा, जापान, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी और फ्रांस के साथ महत्वपूर्ण खनिजों, सेमीकंडक्टर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऊर्जा और आपूर्ति शृंखलाओं में साझेदारी बढ़ानी होगी। रणनीतिक स्वायत्तता को केवल सैन्य गठबंधनों से दूरी तक सीमित न रखकर तकनीक, रक्षा उत्पादन, ऊर्जा सुरक्षा और घरेलू औद्योगिक क्षमता में आत्मनिर्भरता से जोड़ना होगा। साथ ही, छोटे और विकासशील देशों का विश्वास अर्जित करना होगा, ताकि उन्हें लगे कि भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उनकी समस्याओं और आकांक्षाओं को भी पर्याप्त महत्व देता है। यही नेतृत्व की असली कसौटी है। दुनिया को आज केवल एक और महाशक्ति की नहीं, बल्कि ऐसे प्रभावशाली देशों की भी जरूरत है जो शक्ति–संतुलन बनाएं, वैश्विक संस्थाओं को अधिक लोकतांत्रिक बनाएं और संवाद–सहयोग के रास्ते खुले रखें। भारत की आर्थिक क्षमता, अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता और रणनीतिक स्थिति उसे इस भूमिका के लिए अवसर प्रदान करती है।



जो बचे हैं संग समेट लो, सरकार ने नेटफ्लिक्स से कहा कि वह अपने भारतीय प्लेटफॉर्म से पाकिस्तानी मूल के कंटेंट को हटा दे

सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने नेटफ्लिक्स से यह सुनिश्चित करने को कहा है कि पाकिस्तान से जुड़ा कंटेंट भारत में सब्सक्राइबर्स के लिए उपलब्ध न हो। मंत्रालय ने 8 मई, 2025 की अपनी एडवाइजरी को दोहराते हुए यह निर्देश दिया है। यह कदम पाकिस्तानी वेब सीरीज 'जो बचे हैं संग समेट लो' के भारत में रिलीज होने की संभावना को लेकर मिली शिकायतों के बाद उठाया गया है। सूत्रों के मुताबिक, मंत्रालय ने स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म से कहा है कि वह इस एडवाइजरी का पालन करे और वही रुख बनाए रखे, जो उसने पिछले साल जून में सरकार को बताया था। उस समय, नेटफ्लिक्स ने मंत्रालय को सूचित किया था कि उसने पाकिस्तान से जुड़ी कोई भी फिल्म या सीरीज भारत में अपने सब्सक्राइबर्स के लिए उपलब्ध नहीं कराई है। सरकार ने अब प्लेटफॉर्म से अपने उस वादे पर कायम रहने को कहा है। यह ताजा निर्देश मंत्रालय को मिली उन कई शिकायतों और अभ्यावेदनों के बाद आया है, जिनमें भारत में नेटफ्लिक्स पर जो बचे हैं संग समेट लो के उपलब्ध होने की संभावना जताई गई थी। खबरों के अनुसार, इस पाकिस्तानी वेब सीरीज का प्रीमियर 4 दिसंबर, 2026 को होना है। कई लोगों ने नेटफ्लिक्स से मांग की है कि इस शो को रिलीज से पहले ही भारत के कैटलॉग से हटा दिया जाए। यह घटनाक्रम 8 मई, 2025 को जारी मंत्रालय की उस एडवाइजरी के संदर्भ में हुआ है, जिसमें भारत में काम करने वाले ओटीटी प्लेटफॉर्म, मीडिया स्ट्रीमिंग सेवाओं और डिजिटल मध्यस्थों (इंटरमीडियरीज) को पाकिस्तान से जुड़े कंटेंट को हटाने का निर्देश दिया गया था। इस एडवाइजरी में डिजिटल मनोरंजन के कई रूप शामिल थे, जैसे वेब सीरीज, फिल्में, गाने, पॉडकास्ट और अन्य स्ट्रीमिंग कंटेंट– चाहे वे पेड सब्सक्रिप्शन के जरिए उपलब्ध हों या फ्री सर्विस के जरिए। यह एडवाइजरी 22 अप्रैल, 2025 को हुए पहलगाम आतंकी हमले के बाद जारी की गई थी। इस हमले में कई लोगों की जान चली गई थी और भारत–पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया था। मंत्रालय ने राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं का हवाला दिया और भारत में हुए कई आतंकी हमलों में सीमा पार से जुड़े

> “ मंत्रालय ने ८ मई, २०२५ की अपनी एडवाइजरी को दोहराते हुए यह निर्देश दिया है। यह कदम पाकिस्तानी वेब सीरीज 'जो बचे हैं संग समेट लो' के भारत में रिलीज होने की संभावना को लेकर मिली शिकायतों के बाद उठाया गया है।

संबंधों का जिक्र किया। इसके साथ ही, मंत्रालय ने सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021 के प्रावधानों का भी उल्लेख किया। इस बीच, कई संगठनों ने भारतीय दर्शकों से अपील की है कि अगर नेटफ्लिक्स इस सीरीज को रिलीज करता है, तो वे अपना सब्सक्रिप्शन रद्द कर दें। उन्होंने सरकार से यह भी मांग की है कि वह एक स्थायी कानूनी प्रावधान लाए, जिसके तहत भारतीय प्लेटफॉर्मों पर पाकिस्तानी फिल्मों, टीवी शो, कलाकारों और अन्य मनोरंजन सामग्री के दिखाए जाने पर रोक लगाई जा सके।



लाल साड़ी, महाराष्ट्रीयन नथ और गजरा...ईथा की सफलता के लिए मां अंबाबाई के दरबार पहुंची श्रद्धा कपूर

श्रद्धा कपूर ने बुधवार को कोल्हापुर में देवी अंबाबाई की पूजा–अर्चना की। अपनी आने वाली बायोपिक ईथा के प्रमोशन में व्यस्त अभिनेत्री ने अपनी इस फिल्म की सफलता के लिए मंदिर में प्रार्थना की। इस धार्मिक यात्रा के लिए श्रद्धा ने पारंपरिक लुक चुना, जिसमें उन्होंने सिल्वर बॉर्डर वाली लाल रेशमी साड़ी पहनी थी। उनके इस एथनिक लुक को महाराष्ट्रीयन नथ, सुनहरे चोकर और गजरे ने पूरा किया। बता दें कि देवी अंबाबाई, जिन्हें देवी महालक्ष्मी का ही एक रूप माना जाता है, उनकी पूजा कोल्हापुर के प्रसिद्ध श्री महालक्ष्मी (अंबाबाई) मंदिर में की जाती है। यह मंदिर एक महत्वपूर्ण शक्तिपीठ माना जाता है। अब बात करते हैं ईथा की, जिसमें श्रद्धा लावणी कलाकार विठाबाई भाऊ मांग नारायणगांवकर का किरदार निभा रही हैं। इस रोल की तैयारी के बारे में बात करते हुए श्रद्धा ने बताया कि शकुंतला जी के साथ हुई बातचीत से उन्हें लावणी की बारीकियों को समझने में काफी मदद मिली। श्रद्धा ने इस बात पर जोर दिया कि यह पारंपरिक नृत्य केवल शारीरिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें चेहरे के हाव–भाव के जरिए भावनाओं को व्यक्त करना भी शामिल है। श्रद्धा ने आगे बताया कि शकुंतला जी ने इस बात पर जोर दिया था कि तमाशा कलाकारों का जीवन उनके प्रदर्शन में झलकता है। शकुंतला जी के साथ हुई अपनी बातचीत को याद करते हुए श्रद्धा ने कहा, उन्होंने कहा था, श्नाचना तो हो जाएगा–तुम पैरों में घुंघरू बांधोगी और अभ्यास करोगी। लेकिन अपने चेहरे के जरिए तुम्हें जो भाव व्यक्त करने हैं, उन्हें तुम्हें समझना होगा। श्रद्धा ने यह भी स्वीकार किया कि ईथा से पहले उन्हें लावणी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। तू झूठी मैं मक्कार की अभिनेत्री ने अपने किरदार की तैयारी के लिए कई वर्कशॉप में हिस्सा लिया और कई लावणी व तमाशा कलाकारों से मुलाकात की। श्रद्धा ने बताया कि शकुंतला जी ने भी उन्हें इस नृत्य शैली को समझने में मदद की। अभिनेत्री अपने दोनों पैरों में 4–4 किलो के घुंघरू बांधकर अभ्यास किया करती थीं। हालाँकि, इस दौरान श्रद्धा को अपने निर्देशक लक्ष्मण उतेकर और निर्माता दिनेश विजान का पूरा सहयोग मिला। इसमें वह समय भी शामिल है जब एक गाने की शूटिंग के दौरान वह घायल हो गई थीं। दिनेश विजान, लक्ष्मण उतेकर और करिश्मा शर्मा द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत ईथा 4 दिसंबर, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

अमिताभ बच्चन के जलसा और मुंबई मेयर के दफ्तर को फिर से मिली बम से उड़ाने की धमकी



गुरुवार को मुंबई में बॉलीवुड के दिग्गज अमिताभ बच्चन के बंगले जलसा, मेयर कार्यालय और अन्य सार्वजनिक स्थानों को निशाना बनाते हुए बम की नई धमकियां मिलीं। मेयर ऋतु तावड़े और नगर आयुक्त अश्विनी भिड़े को एक धमकी भरा ईमेल मिला है, जिसमें गुरुवार, 26 नवंबर को मेयर कार्यालय में बम विस्फोट की चेतावनी दी गई है। यह तारीख 2008 के मुंबई आतंकी हमलों की बरसी का दिन है। रिपोर्ट के अनुसार, ईमेल में मेयर कार्यालय में दोपहर 1.11 बजे विस्फोट होने की चेतावनी दी गई है। इसमें अगले 30 दिनों के भीतर पूरे मुंबई में ग्रेनेड हमले करने की धमकी भी दी गई है और दावा किया गया है कि 27 नवंबर से 31 दिसंबर के बीच मेट्रो स्टेशनों पर इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) में विस्फोट किए जा सकते हैं। ईमेल में दावा किया गया है कि महालक्ष्मी, साइंस और आचार्य मेट्रो स्टेशनों सहित कई जगहों पर विस्फोटक रखे गए हैं। इसमें बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन के जुहू स्थित आवास जलसा का भी जिक्र है। संदेश में कथित तौर पर खालिस्तान समर्थक नारे और 1984 के सिख–विरोधी दंगों का जिक्र किया गया है। इसमें खालिस्तान नेशनल आर्मी और बब्बर खालसा जैसे संगठनों का भी नाम लिया गया है। यह ताजा ईमेल इस साल पहले मिली ऐसी ही कई धमकियों के बाद आया है। जून में, एक ईमेल के जरिए मेयर की आधिकारिक कार और कार्यालय को उड़ाने की धमकी दी गई थी। सुरक्षा टीमों ने बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) मुख्यालय की तलाशी ली, लेकिन वहां कोई विस्फोटक नहीं मिला। जुलाई में भी इसी तरह की एक धमकी मिली थी। 7 अगस्त को, एक और ईमेल में स्वतंत्रता दिवस से पहले मेयर कार्यालय, मेट्रो स्टेशनों, स्कूलों और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में विस्फोट होने की चेतावनी दी गई थी। अक्टूबर में, एक और धमकी में मेयर कार्यालय, अमिताभ बच्चन के आवास और महालक्ष्मी रेसकोर्स में गायक दिलजीत दोसांझ के कॉन्सर्ट स्थल का जिक्र किया गया था। इन धमकियों के बाद चलाए गए तलाशी अभियानों में कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली।



ब्रेकअप के बाद करीब आए तारा-वीर? एक कमेंट के बाद फिर से सुर्खियों में आया दोनों का रिश्ता

अभिनेता वीर पहाड़िया ने अभिनेत्री तारा सुतारिया के साथ अपने संबंधों को लेकर नई अटकलों को जन्म दे दिया है। उन्होंने ओरी द्वारा अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किए गए तारा के जन्मदिन के वीडियो पर प्रतिक्रिया दी है। इस वीडियो में तारा के हालिया जन्मदिन समारोह के कुछ पल दिखाई दे रहे हैं। ओरी ने एक वीडियो शेयर किया जिसमें तारा की बर्थडे पार्टी की झलकियां हैं,जैसे कि अभिनेत्री का जश्न मनाना, केक काटना और दोस्तों के साथ पोज देना। इस पोस्ट का कैप्शन था, अमीर और मशहूर लोगों की जीवनशैली वीर, जो पहले तारा के साथ रिलेशनशिप में थे, उन्होंने ओरी की पोस्ट पर केक और सफेद दिल वाला इमोजी कमेंट किया। ओरी ने उनके इस कमेंट को पिन भी कर दिया। तारा ने भी ओरी की पोस्ट पर प्रतिक्रिया दी, खासकर बर्थडे वीडियो में इस्तेमाल किए गए गाने को लेकर। उन्होंने लिखा, यह गाना!!! मैं तो मर ही गई और इस गाने को लेकर अपना उत्साह जाहिर किया। यह बातचीत ऐसे समय में हुई है, जब कुछ महीने पहले ही ऐसी खबरें आई थीं कि तारा और वीर अलग हो गए हैं। बताया जाता है कि दोनों ने 2025 की शुरुआत में डेट करना शुरू किया था और उसी साल जुलाई के आसपास अपने रिश्ते को सार्वजनिक कर दिया था। शुरुआत में इस जोड़े ने अपने रिश्ते को निजी रखा था, लेकिन सोशल मीडिया पर उनकी बातचीत से उनका रोमांस धीरे–धीरे सबके सामने आने लगा।नवंबर 2025 में, वीर ने मालदीव में तारा का 30वां जन्मदिन भी मनाया था। उन्होंने तारा के साथ अपनी कुछ खास तस्वीरें शेयर कीं और कैप्शन लिखा, हैप्पी बर्थडे, मेरी जान। जनवरी 2026 में उनके अलग होने की खबरें सामने आईं, हालांकि तारा या वीर में से किसी ने भी आधिकारिक तौर पर उनके ब्रेकअप का कारण नहीं बताया। दिसंबर 2025 में मुंबई में हुए एपी ढिल्लों के कॉन्सर्ट में तारा के पहुंचने के बाद भी उनका रिश्ता चर्चा में आ गया था। तारा मंच पर गायक के साथ शामिल हुईं और उनके साथ कुछ अच्छे पल बिताए। इसके बाद ऑनलाइन कुछ एडिट किए गए क्लिप्स वायरल हो गए, जिन्हें देखकर सोशल मीडिया यूजर्स यह कयास लगाने लगे कि दर्शकों के बीच मौजूद वीर का इस पर क्या रिएक्शन रहा होगा। तारा ने इन अटकलों को खारिज कर दिया और इन्हें झूठी बातें और पेड पीआर बताया। वहीं, वीर ने भी स्पष्ट किया कि उनके रिएक्शन का जो फुटेज वायरल हुआ था, उसे इस तरह एडिट किया गया था जिससे गलत मतलब निकले। बाद में सामने आए एक अनएडिटेड वीडियो में उन्हें परफॉर्मेंस के दौरान तारा और एपी ढिल्लों का उत्साह बढ़ाते हुए देखा गया। हाल ही में कॉफी विद करण सीजन 9 में जाह्नवी कपूर के आने पर यह कॉन्सर्ट वाला मामला फिर से चर्चा में आ गया। रैपिड–फायर राउंड के दौरान, करण जौहर ने जाह्नवी से पूछा कि वह अपने बॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया के भाई वीर को डेटिंग के बारे में क्या सलाह देंगी। इस पर उन्होंने जवाब दिया, उसे कभी किसी कॉन्सर्ट में मत ले जाना। ऑनलाइन लोगों ने इस टिप्पणी को तारा और एपी ढिल्लों वाले कॉन्सर्ट विवाद से जोड़कर देखा, और कई यूजर्स ने इसे तारा पर कसा गया एक तंज माना।





सर्दियों में ड्राई स्किन होगी दूर, बस इस तरह से चेहरे पर लगाएं फेस टोनर, पूरे दिन रहेंगी आप हाइड्रेट

अक्सर सर्दी के मौसम में ड्राई स्किन परेशान करती रहती है। इस मौसम में ड्राई स्किन से निपटना काफी मुश्किल होता है। ठंड में हवा में नमी काफी कम होती है, जिससे स्किन ड्राई होने लगती है। सूखी त्वचा की समस्या से निपटने के लिए टोनर का प्रयोग करना उचित हैं लेकिन इसे सही तरीके से इस्तेमाल करना भी काफी जरुरी है। यदि आपकी स्किन ड्राई हो जाती है, तो हाइड्रेटिंग फेस टोनर आपके लिए बेस्ट है। आइए आपको बताते हैं कि इसका सही यूज कैसे करे। जब भी आप अपने त्वचा की देखभाल करना चाहते हैं, तो सबसे पहले अपने चेहरे पर जमा प्रदूषक, गंदगी, मैल आदि को हटाने के लिए अच्छे मॉइस्चाराइजिंग क्लींजर का यूज करें। इसकी मदद से आप चेहरे और गर्दन को साफ कर सकते हैं। जब त्वचा नम होती है तो टोनर आपकी स्किन में अच्छी तरह से अवशोषित हो जाते हैं। चेहरे को क्लींजर से धोने के बाद थोड़ा नम छोड़ते हुए माइक्रोफाइबर तौलिए से धीरे से थपथपाएं जरुर। इसके बाद आप स्किन को हाइड्रेटिंग रखने के लिए अच्छे क्वालिटी वाले टोनर को ले। मॉइस्चराइजिंग टोनर स्किन के पीएच लेवल को सुंतलित करने में मदद करता है। इसके साथ ही पहले रुखी त्वचा, ड्राई त्वचा में हाइड्रेशन को भी बढ़ावा देते हैं। टोनर को लगाने लिए एक कॉटन पैड पर कुछ बूंद टोनर की डालें और धीरे से ऊपर की ओर स्वाइप करें। चेहरे की नमी बनाए रखने के लिए फेस सीरम का प्रयोग करें। हथेली पर सिरम की बूंदें डालें और फिर फेस सीरम लगाएं। ये स्किन की चमक बनाए रखने में मदद करेगा। इसके साथ ही आप ड्राई स्किन से निपटने के लिए बेस्ट है।

दिल्ली के प्रदूषण से तंग हो गए हैं, तो इन प्राकृतिक जगहों पर जरुर घूमने जाएं

भारत के कई हिस्सों में इस समय प्रदूषण से बुरा हाल हो रखा है। जहरीली हवाओं में रह–रह कर जीना दुश्वार हो जाता है। दिल्ली के आसपास इलाकों में एक्यूआई लेवल 1000 के पार पहुंच गया है। इस दौरान अगर आप घूमने की प्लानिंग कर रहे हैं तो भारत की इन जगहों पर जरुर जाएं। यहां पर आप प्रदूषण के बराबर मिलेगा। यहां आप खुलकर सांस ले सकते हैं। अगर आप शांत और सुकून से भरे जगह की तलाश में हैं तो आप इन परफेक्ट जगहों पर जरुर जा सकते हैं। खूबसूरत पहाड़ियों और घाटियों से घिरा ये शहर आपका का मन मोह लेगा। यहां की खूबसूरती और प्राकृतिक नजारे देखकर आपका मन खुश रहेगा।

मैंगलोर

दक्षिण भारत में घूमने के लिए कई शानदार जगहें है। यदि आप घूमने फिरना पसंद है तो आप मैंगलोर को अपनी लिस्ट में जरुर शामिल करें। यहां आप बीच के साथ ही प्राचीन मंदिर घूम सकते हैं। यहां आपको अलग आर्किटेक्चर देखने को मिलेगा।

गंगटोक

सिक्किम में मौजूद गंगटोक शहर बेहद ही खूबसूरत है। यहां पर घूमने का लिहाज से काफी आकर्षक, प्राकृतिक और बादलों से घिरी हुई शानदार जगह। इस पॉल्यूशन फ्री शहर में आप मजे कर सकते हैं।

कोल्लम

केरल में तिरुवनंतपुरम में एयरपोर्ट में करीब 80 किमी दूर कोल्लम शहर बेहद ही खूबसूरत है। यहां पर शांति से भरा वातावरण देखने को मिल जाएगा। यहां पर आप प्रचीन इतिहास और आधुनिक लाइफस्टाइल जरुर देख सकते हैं।





नॉर्मल डिलीवरी के बाद आराम है सबसे जरूरी, जानें कैसे करें सही देखभाल



नॉर्मल डिलीवरी के बाद महिलाओं के शरीर में कई बदलाव होते हैं, जिनसे उबरने में समय लगता है। यह समय नई मां के लिए बेहद महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि शरीर और मन दोनों को रिकवरी की जरूरत होती है। सही देखभाल और अच्छी आदतें अपनाकर इस प्रक्रिया को आसान बनाया जा सकता है। यहां हम कुछ असरदार टिप्स साझा कर रहे हैं, जो नॉर्मल डिलीवरी के बाद आपको जल्दी रिकवर करने में मदद करेंगे।

पूरी नींद लें

नॉर्मल डिलीवरी के बाद मां के शरीर को थकावट, हल्के दर्द और सूजन से उबरने के लिए आराम की सख्त जरूरत होती है। यह समय शरीर को पुनः ऊर्जा और ताकत देने का होता है। नई मां के लिए पूरी नींद लेना थोड़ा मुश्किल हो सकता है, क्योंकि बच्चे की देखभाल का समय अधिक होता है। लेकिन जितना संभव हो, छोटे–छोटे अंतराल में सोने की कोशिश करें। सही नींद से शरीर को नई ऊर्जा मिलती है और दर्द या सूजन जैसी समस्याएं जल्दी ठीक होती हैं। हर संभव अवसर पर आराम करें। ज्यादा थकावट लेने से शरीर की रिकवरी में देरी हो सकती है। इसलिए अपनी दैनिक जिम्मेदारियों को हल्का रखें और अपने शरीर को आराम का समय दें। पार्टनर और परिवार के अन्य सदस्यों से मदद मांगें। परिवार का सहयोग इस समय मां के लिए मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से फायदेमंद साबित होता है। आराम को प्राथमिकता देकर मां न केवल अपनी रिकवरी को तेज कर सकती है, बल्कि अपने बच्चे की बेहतर देखभाल के लिए भी खुद को तैयार कर सकती है।

पोषणयुक्त आहार का सेवन करें

नॉर्मल डिलीवरी के बाद मां के शरीर को पोषण की अत्यधिक जरूरत होती है। इस समय आयरन और कैल्शियम से भरपूर आहार लेना जरूरी है। हरी सब्जियां, दाल, दूध और सूखे मेवे का सेवन शरीर को जरूरी पोषक तत्व प्रदान करते हैं। साथ ही, प्रोटीन और विटामिन्स से भरपूर फल और दालें मां की ताकत बढ़ाने में मदद करती हैं और रिकवरी को तेज करती हैं। जंक फूड और तैलीय भोजन से बचें, क्योंकि यह पाचन संबंधी समस्याएं पैदा कर सकता है। सही आहार न केवल शरीर को अंदर से मजबूत बनाता है, बल्कि यह स्तनपान के दौरान बच्चे को भी लाभ पहुंचाता है।

हल्की एक्सरसाइज और योग करें

डिलीवरी के बाद हल्की एक्सरसाइज और योग करने से मां के शरीर को शारीरिक ताकत और मानसिक सुकून मिलता है। शुरुआती दिनों में धीरे–धीरे पैदल चलना शरीर में गति लाने और ब्लड सर्कुलेशन को बेहतर बनाने का अच्छा तरीका है। हल्के योगासन मांसपेशियों को ताकत और लचीलापन देते हैं। हालांकि, किसी भी एक्सरसाइज या योग को शुरू करने से पहले डॉक्टर से सलाह जरूर लें। यह सुनिश्चित करता है कि आपका शरीर इसे अपनाने के लिए तैयार है और किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं होगी।

शरीर को हाइड्रेट रखें

डिलीवरी के बाद मां के शरीर को हाइड्रेट रखना बहुत जरूरी है। पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से शरीर के टॉक्सिन्स बाहर निकलते हैं और अंग बेहतर तरीके से काम करते हैं। खासकर स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए हाइड्रेशन बेहद आवश्यक है, क्योंकि यह दूध उत्पादन को बढ़ावा देता है। पानी के साथ–साथ नारियल पानी और हर्बल चाय जैसे पेय पदार्थ भी शरीर को ऊर्जा और पोषण प्रदान करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें

शारीरिक रिकवरी के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी बहुत जरूरी है। मां बनने के बाद कई महिलाएं भावनात्मक उतार–चढ़ाव का अनुभव करती हैं। इस समय परिवार और दोस्तों से भावनात्मक सहयोग लेना मददगार हो सकता है। खुद को खुश रखने के लिए सकारात्मक माहौल बनाएं और जरूरत महसूस हो तो किसी विशेषज्ञ से सलाह लेने में संकोच न करें। आत्मदेखभाल भी जरूरी हैकृअपने लिए समय निकालें, अपनी पसंदीदा चीजें करें, और मानसिक शांति बनाए रखें।

सही देखभाल क्यों जरूरी है?

नॉर्मल डिलीवरी के बाद शरीर को सामान्य स्थिति में लौटने के लिए समय और सही देखभाल की जरूरत होती है। सही आहार, पर्याप्त आराम, एक्सरसाइज, हाइड्रेशन और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखकर महिलाएं अपनी रिकवरी प्रक्रिया को तेज और सहज बना सकती हैं। साथ ही, इस समय परिवार और पार्टनर का सहयोग बेहद अहम होता है। जब मां को सही देखभाल और प्यार मिलता है, तो वह जल्दी से स्वस्थ होकर अपनी दिनचर्या में लौट सकती है।

इस समय परिवार और पार्टनर की जिम्मेदारी होती है कि वह मां का हरसंभव ख्याल रखें ताकि वह आसानी से अपनी दिनचर्या में लौट सके। सही देखभाल से यह सफर न केवल आसान होगा बल्कि मां और बच्चे दोनों के लिए सुखद भी।

ठंड में रखें सेहत का ख्याल, जानें क्या खाएं और क्या न खाएं





सर्दियों का मौसम अपनी ठंडक और स्वादिष्ट खानपान के लिए जाना जाता है, जहां गजक, रेवड़ी और गुड़ के लड्डू जैसी चीजें हर घर की पसंद बन जाती हैं। लेकिन ठंड के इस आरामदायक मौसम में हमारा खानपान हमारी सेहत पर बड़ा असर डालता है। जहां कुछ खाद्य पदार्थ शरीर को गर्म और स्वस्थ रखने में मदद करते हैं, वहीं कुछ ऐसी चीजें भी हैं जो हमारी सेहत के लिए खतरनाक साबित हो सकती हैं। तो आइए जानते हैं, सर्दियों में किन चीजों का सेवन करने से बचना चाहिए ताकि आपकी सेहत बनी रहे और आप इस मौसम का भरपूर आनंद उठा सकें।,

सर्दियों में इन चीजों से बचें

ठंडी और बर्फीली चीजें

सर्दियों में आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक, और फ्रिज का ठंडा पानी पीने से बचना चाहिए क्योंकि ये शरीर का तापमान कम करती हैं। इससे इम्यून सिस्टम कमजोर हो जाता है, जिससे सर्दी, खांसी, गले की खराश, और बुखार जैसी समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। ठंडी चीजों का अधिक सेवन शरीर को अंदर से ठंडा करता है, जिससे जोड़ों में दर्द और सर्दियों के अन्य संक्रमण हो सकते हैं। इसके अलावा, ठंडी चीजें गले की मांसपेशियों को प्रभावित करती हैं और इन्फ्लूएंजा का खतरा बढ़ाती हैं।

डीप फ्राई खाद्य पदार्थ

पकौड़ी, कचौड़ी, समोसे, पूरियां, और अन्य तले हुए खाद्य पदार्थों का सर्दियों में अधिक सेवन करने से पाचन तंत्र पर दबाव बढ़ता है। ठंड के मौसम में पाचन प्रक्रिया धीमी हो जाती है, जिससे भारी भोजन को पचाना मुश्किल हो जाता है। यह गैस, एसिडिटी, अपच, और पेट दर्द का कारण बन सकता है। तैलीय भोजन में ट्रांस फैट की मात्रा अधिक होती है, जो हृदय स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती है। इसके अतिरिक्त, ऐसे खाद्य पदार्थ शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ाकर वजन बढ़ने का कारण बनते हैं।

ज्यादा कैफीन का सेवन

सर्दियों में गर्म रहने के लिए लोग चाय और कॉफी का अधिक सेवन करते हैं। हालांकि, कैफीन का ज्यादा सेवन शरीर को डिहाइड्रेट कर देता है, जिससे त्वचा में रूखापन, फटे होंठ, और बालों का झड़ना जैसी समस्याएं हो सकती हैं। कैफीन नींद के पैटर्न को भी बाधित कर सकता है, जिससे थकावट और मानसिक तनाव बढ़ता है। इसके अलावा, यह शरीर में एसिडिटी और पाचन संबंधी समस्याएं पैदा कर सकता है। कैफीन का अधिक सेवन हड्डियों की कमजोरी और जोड़ों में दर्द का कारण भी बन सकता है।

ज्यादा मीठा खाना

गाजर का हलवा, मूंग का हलवा, और अन्य मीठी चीजों का अधिक सेवन सर्दियों में स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। ज्यादा मीठा खाने से ब्लड शुगर लेवल बढ़ता है, जिससे डायबिटीज का खतरा बढ़ता है। अतिरिक्त चीनी का सेवन शरीर में वसा के रूप में जमा हो जाता है, जो वजन बढ़ाने और मोटापे का कारण बनता है। इससे दांतों की सड़न और गम संक्रमण जैसी दंत समस्याएं भी हो सकती हैं। सर्दियों में मीठा खाने से शरीर की ऊर्जा का असंतुलन हो सकता है, जिससे आलस्य और थकान महसूस होती है।

जंक फूड और प्रोसेस्ड फूड

सर्दियों में जंक फूड जैसे बर्गर, पिज्जा, चिप्स, और प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों का सेवन करने से बचें। इनमें प्रिजर्वेटिव्स और केमिकल्स मौजूद होते हैं, जो शरीर की इम्यूनिटी को कमजोर कर देते हैं। इन खाद्य पदार्थों में पोषक तत्वों की कमी होती है और यह शरीर में विषाक्त पदार्थों को बढ़ाते हैं। जंक फूड का अधिक सेवन हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, और कोलेस्ट्रॉल जैसी गंभीर समस्याओं का कारण बन सकता है। सर्दियों में प्रोसेस्ड फूड का सेवन करने से पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है और संक्रमण का खतरा बढ़ता है। यह भोजन शरीर में सूजन और थकावट पैदा कर सकता है। सर्दियों में स्वस्थ रहने के लिए ताजा और पोषणयुक्त खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता दें। इन हानिकारक चीजों से बचकर आप सर्दियों का आनंद पूरी तरह से ले सकते हैं।

स्वस्थ रहने के लिए अपनाएं ये टिप्स

ताजे फल और सब्जियों को करें डाइट में शामिल

ताजे फल और सब्जियां सर्दियों के लिए बेहतरीन आहार हैं। इनमें मौजूद विटामिन, मिनरल्स, और एंटीऑक्सीडेंट्स इम्यूनिटी को मजबूत बनाते हैं और शरीर को संक्रमण से बचाने में मदद करते हैं। संतरा, आंवला, गाजर, शलजम, पालक, और मूली जैसी मौसमी सब्जियां और फल खाएं। ये न केवल शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं, बल्कि त्वचा को स्वस्थ और चमकदार बनाए रखने में भी मदद करते हैं। फलों का सेवन कच्चा करें या सलाद के रूप में खाएं, और सब्जियों को हल्के मसालों के साथ पकाएं ताकि पोषक तत्व बरकरार रहें।

संतुलित आहार लें

सर्दियों में ओवरईटिंग से बचना बेहद जरूरी है, क्योंकि भारी और ज्यादा खाना पाचन पर दबाव डाल सकता है। संतुलित आहार में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन, और फाइबर को शामिल करें। घी और मक्खन का सेवन सीमित मात्रा में करें। भोजन में साबुत अनाज, दालें, और हल्का सूप शामिल करें, जो आसानी से पच सके। रात के समय हल्का भोजन करें, ताकि सोने के दौरान शरीर को आराम मिले। संतुलित आहार न केवल वजन को नियंत्रित करता है, बल्कि शरीर को अंदर से मजबूत बनाता है।

गर्म पेय पदार्थों का सेवन करें

सर्दियों में शरीर को गर्म रखने के लिए ग्रीन टी, अदरक की चाय, मसाला चाय, और हल्दी वाला दूध बहुत फायदेमंद हैं। ये पेय पदार्थ शरीर को डिटॉक्स करने और इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। गर्म पानी में शहद और नींबू मिलाकर पीने से गले की खराश और सर्दी–जुकाम में राहत मिलती है। हल्दी वाला दूध एंटी–इंफ्लेमेटरी गुणों से भरपूर होता है और ठंड से बचाने में मदद करता है। इसके अलावा, सूप और हर्बल चाय का सेवन भी स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

व्यायाम करें

ठंड के मौसम में शरीर को सक्रिय और स्वस्थ रखने के लिए नियमित व्यायाम बहुत जरूरी है। सुबह की सैर, योग, स्ट्रेचिंग, और हल्के वर्कआउट को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। सर्दियों में मांसपेशियों को लचीला बनाए रखने और रक्त संचार को बेहतर करने के लिए व्यायाम बहुत फायदेमंद है। ठंड में व्यायाम करने से शरीर गर्म रहता है और मूड बेहतर होता है। व्यायाम के बाद गर्म पानी से स्नान करें और आरामदायक कपड़े पहनें। अगर बाहर जाना संभव न हो, तो घर पर ही छोटे–छोटे एक्सरसाइज रूटीन अपनाएं। सर्दियों में स्वस्थ रहने के लिए यह जरूरी है कि आप अपने खानपान, आदतों और दिनचर्या में संतुलन बनाए रखें। इन उपायों को अपनाकर आप न केवल बीमारियों से बच सकते हैं, बल्कि ठंड के मौसम का पूरा आनंद भी ले सकते हैं।

संक्षिप्त



US Trade Deal जल्द फाइनल करे भारत, 17% Tariff से प्रतिस्पर्धियों पर मिलेगी बढ़त: FIEO

भारतीय निर्यातकों ने बृहस्पतिवार को अमेरिका के साथ प्रस्तावित व्यापार समझौते को जल्द अंतिम रूप देने की मांग करते हुए कहा कि अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) की रिपोर्ट में प्रस्तावित 17 प्रतिशत शुल्क से भारत को प्रतिस्पर्धी देशों के मुकाबले बढ़त मिल सकती है। निर्यातकों ने कहा कि व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने का यह सही समय है, क्योंकि उन्हें अमेरिकी खरीदारों से अच्छे ऑर्डर मिल रहे हैं और बाजार तक पहुंच बढ़ने से निर्यात में और वृद्धि हो सकती है। भारतीय निर्यात संगठनों के महासंघ (फियो) के अध्यक्ष एस सी रल्हन ने कहा, भारत को जल्द से जल्द व्यापार समझौता करना चाहिए। हमें अमेरिका से काफी ऑर्डर मिल रहे हैं और बाजार को और खोलने से निर्यात बढ़ाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अमेरिका के साथ व्यापार समझौता नहीं होने से भारतीय निर्यातकों को उन देशों के प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले नुकसान हो सकता है, जिन्हें कम शुल्क का लाभ मिलेगा। इससे अमेरिकी बाजार में भारतीय उत्पादों की कीमत प्रतिस्पर्धा प्रभावित हो सकती है और मौजूदा खरीदारों को बनाए रखने के साथ नए ऑर्डर हासिल करना भी मुश्किल हो सकता है। हालांकि रल्हन ने कहा कि व्यापार समझौता संतुलित एवं पारस्परिक होना चाहिए तथा भारत के दीर्घकालिक आर्थिक एवं विकास हितों की रक्षा करने के साथ भारतीय निर्यातकों को समान अवसर उपलब्ध कराने वाला होना चाहिए। उन्होंने कहा कि उद्योग जगत इन घटनाक्रमों से पैदा हुई अनिश्चितता को लेकर चिंतित है, लेकिन निर्यातकों में इसे लेकर कोई घबराहट नहीं है। अमेरिका ने बुधवार को भारत से आयात पर 25 प्रतिशत शुल्क लगाने का प्रस्ताव किया था। हालांकि, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार समझौता होने की स्थिति में इसे 17 प्रतिशत तक सीमित रखने का प्रावधान किया गया है। यूएसटीआर का प्रस्ताव है कि समझौता होने की स्थिति में भारत पर 17 प्रतिशत शुल्क ही लगेगा। वहीं बांग्लादेश, कंबोडिया, इंडोनेशिया, मलेशिया और थाईलैंड के लिए यह दर 18 प्रतिशत तथा वियतनाम और चीन के लिए 20 प्रतिशत होगी। फियो ने भारत के उत्पादों के लिए प्रतिस्पर्धी शुल्क व्यवस्था सुनिश्चित करने, गैर–शुल्क बाधाओं को दूर करने और बाजार तक पहुंच बढ़ाने की मांग की। उसने कहा कि सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) पर खास ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि उनके पास शुल्क और अनुपालन लागत में अचानक वृद्धि का बोझ उठाने की सीमित क्षमता होती है। चमड़ा निर्यात परिषद के अध्यक्ष रमेश कुमार जुनेजा ने भी कहा कि प्रस्तावित 17 प्रतिशत शुल्क भारत के लिए बेहतर अवसर है। उन्होंने कहा कि यह दर बांग्लादेश और वियतनाम जैसे प्रतिस्पर्धी देशों के मुकाबले भारत को बेहतर स्थिति में रखती है। फरीदा समूह के चेयरमैन रफीक अहमद ने कहा कि अमेरिका के साथ व्यापार समझौता भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यूएसटीआर की रिपोर्ट का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि भारतीय वस्तुओं पर प्रस्तावित शुल्क वियतनाम के मुकाबले कम है। भारत और अमेरिका फरवरी में तय रूपरेखा के बाद अंतरिम द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर बातचीत कर रहे हैं। पिछले साल लगाए गए उच्च शुल्कों को अमेरिकी उच्चतम न्यायालय द्वारा रद्द किए जाने के बाद दोनों देशों के बीच बातचीत फिर से शुरू हुई थी।

US Export Ban के बाद खुले बाजार में आई एनवीडिया की एडवांस एआई चिप की बाढ़

अमेरिकी कंपनी एनवीडिया की एडवांस एआई चिप की अचानक बड़ी संख्या में बिक्री के लिए पेशकश की जा रही है। इसकी वजह अमेरिका की ओर से चीन को लेकर बनाए गए नए नियम बताए जा रहे हैं। इन नियमों के बाद चिप बेचने वाले कारोबारियों को नए खरीदारों की तलाश करनी पड़ रही है। दरअसल, अमेरिका ने चीन की कंपनियों के लिए दूसरे देशों में मौजूद डेटा सेंटर के जरिए एनवीडिया की एडवांस चिप इस्तेमाल करने का रास्ता भी बंद कर दिया है। सीएनबीसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 16 नवंबर को डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन की ओर से नए प्रतिबंधों की घोषणा के तुरंत बाद बाजार में एनवीडिया के ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट (जीपीयू) की उपलब्धता बढ़ने लगी। इस मामले की जानकारी रखने वाले लोगों का कहना है कि बिक्री के लिए आ रही चिप की यह बड़ी खेप सीधे तौर पर अमेरिकी नियमों में हुए बदलाव से जुड़ी है। अमेरिका के वाणिज्य विभाग के उद्योग एवं सुरक्षा ब्यूरो ने इन नए नियमों को अंतरिम अंतिम आदेश के रूप में जारी किया है। ये नियम 19 नवंबर से लागू हो गए हैं। इनका मकसद उन कंपनियों पर रोक लगाना है, जो दूसरे देशों में बने डेटा सेंटर के जरिए अमेरिकी निर्यात नियमों से बचकर चीन को एडवांस तकनीक तक पहुंच दे रही थीं। बता दें कि अमेरिका पहले ही एनवीडिया की सबसे एडवांस चिप की सीधे चीन को बिक्री पर रोक लगा चुका है। अब दूर बैठकर इन चिप का इस्तेमाल करने की सुविधा पर भी शिकंजा कसा गया है। एआई से जुड़ी तकनीकी सुविधाओं के लिए बाजार उपलब्ध कराने वाली कंपनी जीपीयू मार्ट के अध्यक्ष जैक डुहामेल ने सीएनबीसी को बताया कि बाजार में अचानक आई चिप की इस खेप का संबंध नए अमेरिकी नियमों से है। उनके मुताबिक, एक विक्रेता ने साफ तौर पर बताया कि वह नए प्रतिबंधों के कारण अपनी चिप बेच रहा है। वहीं, इस मामले से जुड़े 2 अन्य लोगों ने भी बताया कि बिक्री के लिए उपलब्ध कराए जा रहे इन उपकरणों को पहले किराये पर देने की योजना थी। दरअसल, अमेरिका में सांसदों की चिंता लगातार बढ़ रही है कि चीन की कंपनियां किसी न किसी रास्ते से अमेरिकी एआई तकनीक हासिल कर रही हैं। इसी मुद्दे पर अमेरिका के व्यापार प्रतिनिधि जेमिसन ग्रीर ने 26 नवंबर को सीएनबीसी से बातचीत में कहा कि वाणिज्य विभाग ने नए नियम इसलिए बनाए हैं, ताकि इन रास्तों को बंद किया जा सके। ग्रीर के मुताबिक, अमेरिका पहले ही अपने सबसे एडवांस ब्लैकवेल चिप और इसी स्तर की दूसरी चिप की चीन को सीधी बिक्री पर रोक लगा चुका है। लेकिन कुछ कंपनियां दक्षिण–पूर्व एशिया जैसे देशों के रास्ते इन चिप तक पहुंच बना रही थीं। इसके अलावा तीसरे देशों के डेटा सेंटर से दूर बैठकर चिप इस्तेमाल करने का विकल्प भी मौजूद था।

चेतेश्वर पुजारा बोले हार्दिक पांड्या से पंजाब किंग्स मजबूत पर गेंदबाज जरूरी



आईपीएल 2027 में पंजाब किंग्स को अपना पहला खिताब जीतने के लिए गेंदबाजी पर विशेष ध्यान देना होगा। चेतेश्वर पुजारा के अनुसार हार्दिक पांड्या से टीम की बल्लेबाजी मजबूत होगी, लेकिन अर्शदीप सिंह के जाने से तेज गेंदबाजी में कमी आई है। नीलामी में सही गेंदबाज चुनना पंजाब किंग्स के लिए निर्णायक साबित होगा। आईपीएल 2027 में पहली बार खिताब जीतने का सपना देख रही पंजाब किंग्स के सामने इस बार खिलाड़ियों के चयन की बड़ी चुनौती होगी। टीम में हार्दिक पांड्या के आने से बल्लेबाजी और हरफनमौला खिलाड़ियों का विकल्प मजबूत हुआ है, लेकिन तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह के मुंबई इंडियंस में जाने से गेंदबाजी कमजोर हो सकती है। भारतीय टीम के पूर्व बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा का मानना है कि पंजाब की खिताबी उम्मीदें काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेंगी कि नीलामी में टीम अर्शदीप की जगह किस खिलाड़ी को चुनती है। चेतेश्वर पुजारा ने जियोस्टार से बातचीत में कहा कि हार्दिक पांड्या का टीम में आना पंजाब के लिए बड़ी अच्छी खबर है। उनकी मौजूदगी से बल्लेबाजी क्रम को मजबूती मिलेगी और टीम को मध्यक्रम में एक अनुभवी खिलाड़ी मिलेगा। हालांकि, अर्शदीप का जाना टीम के लिए बड़ा नुकसान हो सकता है। पुजारा के मुताबिक, अर्शदीप भले ही पिछले सत्र में उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाए हों, लेकिन मौजूदा समय में वह अच्छी लय में नजर आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब को नीलामी में अर्शदीप के विकल्प पर खास ध्यान देना होगा। टीम को ऐसे तेज गेंदबाज की जरूरत होगी, जो पूरे टूर्नामेंट में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर सके। पुजारा का मानना है कि केवल हार्दिक के आने से गेंदबाजी की जिम्मेदारी पूरी नहीं हो सकती। उनकी फिटनेस और गेंदबाजी की मौजूदा स्थिति भी अहम होगी, क्योंकि वह चोट से उबर रहे हैं। पुजारा ने साफ किया कि हार्दिक को टीम का मुख्य गेंदबाज मानना सही नहीं होगा। वह गेंदबाजी में मदद जरूर कर सकते हैं, लेकिन पंजाब को ऐसे विशेषज्ञ गेंदबाजों की जरूरत है जो दबाव के समय विकेट निकाल सकें और रन रोक सकें। नीलामी में टीम किन गेंदबाजों को चुनती है और उनका प्रदर्शन कैसा रहता है, यही पंजाब के अगले सत्र की दिशा तय कर सकता है। बल्लेबाजी को लेकर पुजारा ने हार्दिक की भूमिका को काफी अहम बताया। उनके मुताबिक, पंजाब को पिछले कुछ समय से मध्यक्रम के निचले हिस्से में ऐसे बल्लेबाज की जरूरत महसूस होती रही है, जो शुरुआती विकेट गिरने के बाद पारी को संभाल सके। हार्दिक इस जिम्मेदारी को अच्छी तरह निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि हार्दिक के आने से टीम की छठे और सातवें नंबर की बल्लेबाजी की समस्या काफी हद तक दूर हो सकती है। उनकी मौजूदगी से पंजाब को न सिर्फ तेजी से रन बनाने का विकल्प मिलेगा, बल्कि जरूरत पड़ने पर वह पारी को संभालने में भी मदद कर सकते हैं। गौरतलब है कि आईपीएल में खिताब जीतने के लिए सिर्फ मजबूत बल्लेबाजी काफी नहीं होती। पूरे टूर्नामेंट में अच्छी गेंदबाजी, सही समय पर विकेट लेना और आखिरी ओवरों में रन रोकना भी उतना ही जरूरी है। पंजाब किंग्स अब तक एक बार भी आईपीएल ट्रॉफी नहीं जीत सकी है। ऐसे में टीम प्रबंधन के सामने इस बार संतुलित टीम तैयार करने की चुनौती होगी। हार्दिक की मौजूदगी और अर्शदीप की जगह नए गेंदबाज का चयन पंजाब की खिताबी तैयारी के सबसे अहम पहलुओं में शामिल हैं। पंजाब किंग्स को आईपीएल 2027 में पहला खिताब जीतने के लिए नीलामी में मजबूत गेंदबाजों की जरूरत होगी। चेतेश्वर पुजारा के मुताबिक, हार्दिक पांड्या के आने से बल्लेबाजी मजबूत होगी, लेकिन अर्शदीप सिंह के मुंबई इंडियंस में जाने से गेंदबाजी में खालीपन आया है। अर्शदीप का सही विकल्प चुनना पंजाब की खिताबी उम्मीदों के लिए अहम होगा।

खराब फॉर्म पर बोले न्यूजीलैंड के कप्तान टॉम लैथम, रन बनाने का कोई जादुई उपाय नहीं

न्यूजीलैंड के कप्तान टॉम लैथम, जिन्होंने वेलिंगटन में भारत के खिलाफ पहले टेस्ट मैच की दोनों पारियों में शून्य (डक) बनाए थे, ने वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करने की अहमियत बताई। उन्होंने कहा कि रन बनाने की राह पर वापस लौटने का कोई जादुई उपाय नहीं है। लैथम ने ही भारत में 3–0 की क्लीन स्वीप जीत के साथ टेस्ट क्रिकेट में भारत के खराब दौर की शुरुआत की थी। यह 11 सालों में भारत की अपने घरेलू मैदान पर पहली टेस्ट सीरीज हार थी। अब लैथम फिर से रन बनाकर न्यूजीलैंड को घरेलू सीरीज जिताने में मदद करना चाहेंगे। साथ ही, वे वर्ल्ड टेस्ट चौंपियनशिप (ज्ब) के कुछ अहम अंक हासिल करना चाहेंगे, ताकि लॉर्ड्स में होने वाले फाइनल तक पहुंचने का उनका सपना जिंदा रहे। लैथम न्यूजीलैंड के सबसे सफल टेस्ट क्रिकेटरों में से एक हैं। उन्होंने 96 टेस्ट मैचों में 38.62 की औसत से 6,450 रन बनाए हैं। 173 पारियों में उनके नाम 17 शतक और 31 अर्धशतक दर्ज हैं, जिसमें उनका सर्वोच्च स्कोर नाबाद 264 रन है। वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू सीरीज में तीन शतक लगाने के बाद, लैथम ने पांच टेस्ट मैचों की नौ पारियों में 21.00 के औसत से केवल 189 रन बनाए हैं। इस खराब दौर में नॉटिंघम में इंग्लैंड के खिलाफ खेली गई 151 रनों की पारी ही उनकी एकमात्र उल्लेखनीय पारी रही है; बाकी पारियों में सात बार वह दहाई के अंक तक भी नहीं पहुंच पाए और चार बार शून्य पर आउट हुए। मैच से पहले पत्रकारों से अपनी फॉर्म के बारे में बात करते हुए, लैथम ने कहा कि न्यूजीलैंड में ओपनिंग करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है और इसके लिए अच्छी तैयारी बहुत जरूरी है। हालांकि, तैयारी से अच्छे नतीजों की गारंटी नहीं मिलती। इसके बावजूद, लैथम ने अपनी तैयारी में कोई कमी नहीं आने दी है और वह बस वर्तमान पल पर ध्यान केंद्रित रखना चाहते हैं। क्रिकइन्फो के अनुसार, लैथम ने कहा कि जाहिर है, न्यूजीलैंड की परिस्थितियों में ओपनिंग करना काफी चुनौतीपूर्ण हो सकता है। हम क्रिकेट खेल रहे हैं, इसलिए हम चाहे कितनी भी अच्छी तैयारी कर लें और सब कुछ सही तरीके से कर लें, लेकिन मैदान पर उतरने के बाद अच्छे नतीजों की गारंटी नहीं होती। मेरी तैयारी वैसी ही है जैसी पिछले हफ्ते थी, और बात बस इतनी है कि आप उस पल में पूरी तरह से मौजूद रहने की कोशिश करें। उन्होंने आगे कहा कि मैंने कई बार कहा है कि मेरा लक्ष्य टीम के लिए अपना रोल बेहतरीन तरीके से निभाना और जितना हो सके योगदान देना है – चाहे वह बल्लेबाजी के नजरिए से हो या कप्तान के तौर पर। मेरी जिम्मेदारी बल्लेबाजी खत्म होने के साथ ही खत्म नहीं हो जाती। इसलिए, मैं इस बात को लेकर बिल्कुल स्पष्ट रहना चाहता हूं कि मुझे कैसे काम करना है। इस हफ्ते मेरे पास फिर से एक बहुत अच्छा मौका है कि मैं वही काम जारी रखूं जो मैं लंबे समय से करता आ रहा हूं।



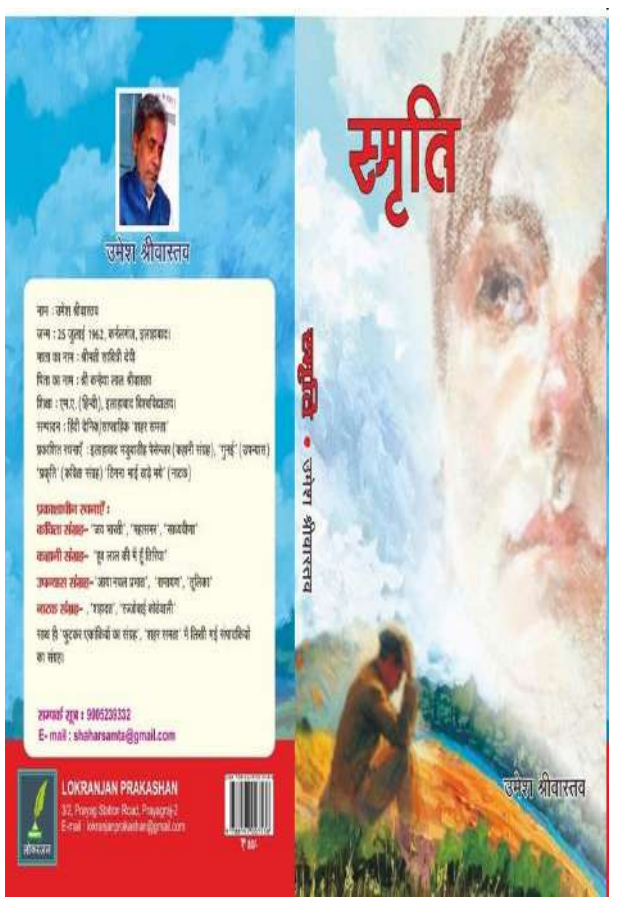

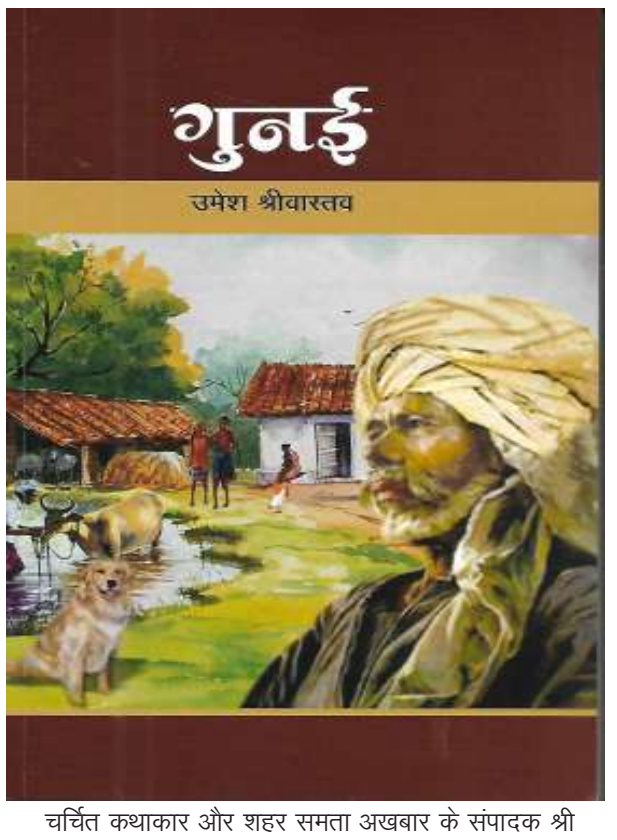

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

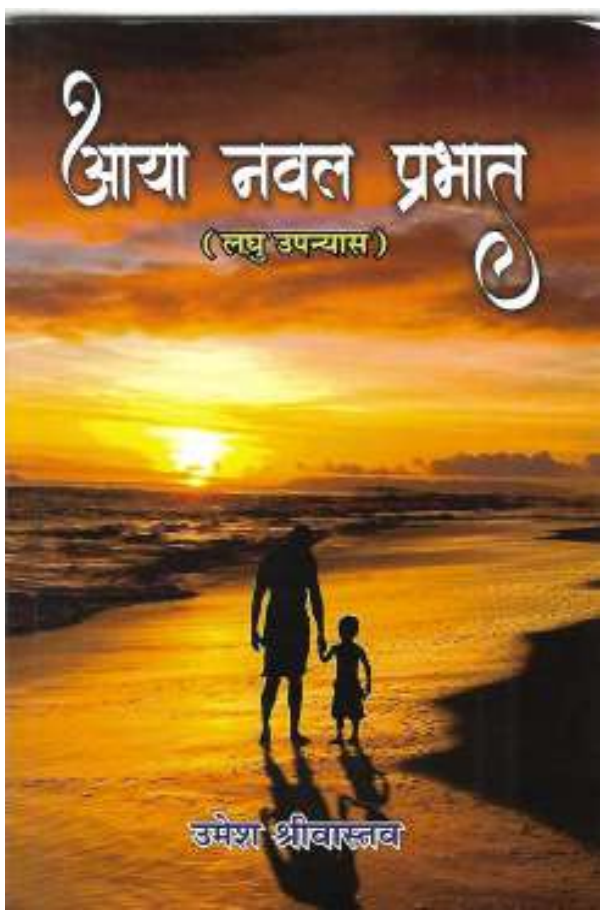

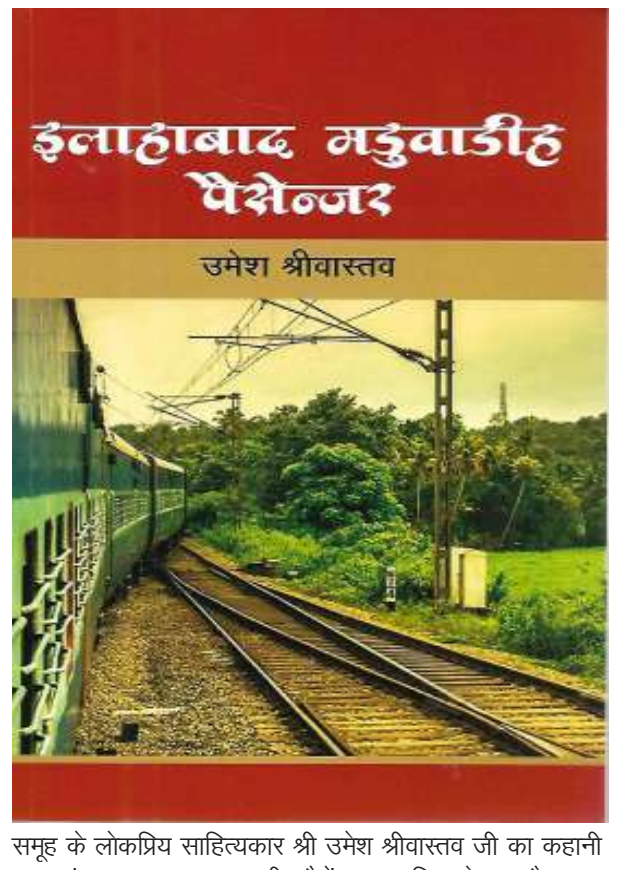

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

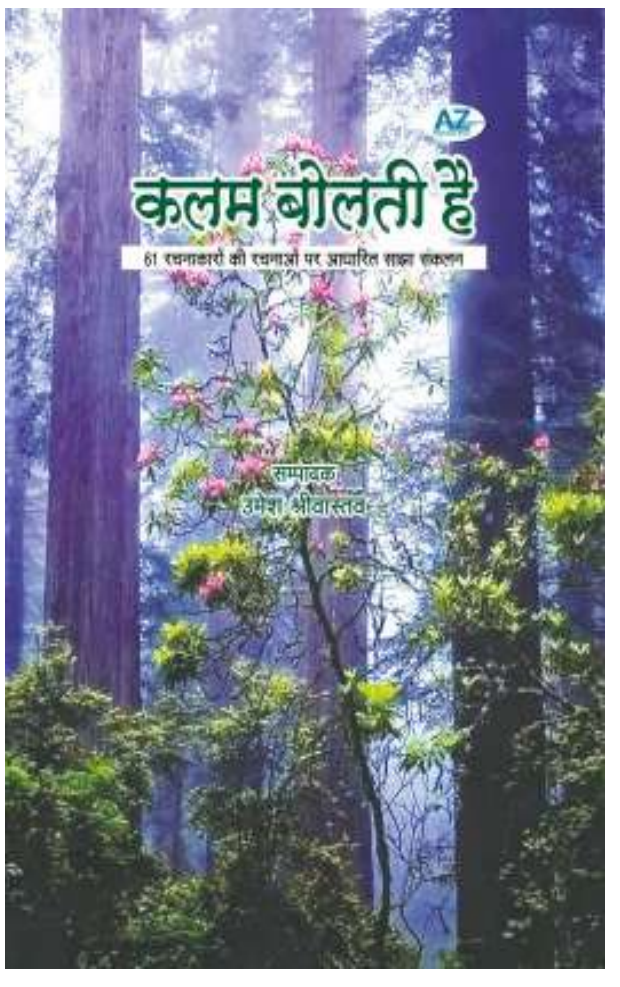

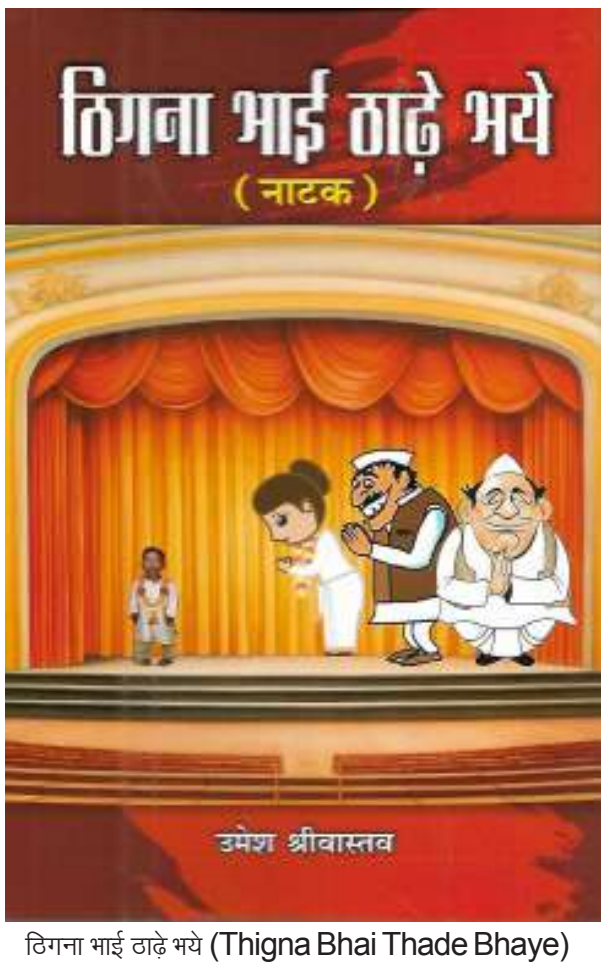

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

यूएस टैरिफ विवाद पर बोला चीन, गलत नीतियां सुधारे अमेरिका, जवाब देने का हक सुरक्षित

चीन ने गुरुवार को अमेरिका से आग्रह किया कि वह नए अमेरिकी शुल्कों (टैरिफ) को लेकर अपनी गलत नीतियों को सुधारे। साथ ही, चीन ने चेतावनी दी कि उसके पास इसके जवाब में जरूरी कदम उठाने का अधिकार सुरक्षित है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, चीनी वाणिज्य मंत्रालय ने कहा कि वह घटनाक्रम पर करीबी नजर रखेगा और उसने वाशिंगटन से आग्रह किया कि वह बातचीत और परामर्श के जरिए मुद्दों को



सुलझाने के सही रास्ते पर वापस लौटे। अमेरिका के प्रस्तावित टैरिफ कई व्यापारिक साझेदारों को निशाना बनाते हैं, जिनमें चीन, यूरोपीय संघ और जापान शामिल हैं। इन पर 20: तक की दरें लगाई जा सकती हैं। चीन पर सबसे ऊंची दरों में से एक, यानी 20: की दर लागू हो सकती है। हालांकि, समाचार एजेंसी एएफपी की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जेमिसन ग्रीर ने कहा कि ये प्रस्तावित शुल्क बीजिंग के साथ चल रही व्यापार वार्ताओं के दायरे में ही आते हैं। एक प्रेस ब्रीफिंग के दौरान, वाणिज्य मंत्रालय के प्रवक्ता हे याडोंग ने कहा अमेरिका की जांच एकतरफा कदम है, और चीन इसका कड़ा विरोध करता है। उन्होंने कहा कि चीन अमेरिका से आग्रह करता है कि वह अपनी गलत कार्यवाहियों को सुधारे और बातचीत व परामर्श के जरिए मुद्दों को सुलझाने के सही रास्ते पर वापस आए। उन्होंने आगे कहा कि टैरिफ लगाने के लिए श्अतिरिक्त क्षमताश (ओवरकैपेसिटी) का हवाला देना असल में श्संरक्षणवादश (प्रोटेक्शनिज्म) के लिए एक बहाना है। यादोंग ने कहा कि इस तरह के कदम न केवल उनकी अपनी संरचनात्मक असंतुलनों को दूर करने में विफल रहते हैं, बल्कि ये वैश्विक औद्योगिक और आपूर्ति श्रृंखलाओं की सुरक्षा और स्थिरता को भी बाधित करते हैं, औद्योगिक सहयोग में रुकावट डालते हैं, वैश्विक महंगाई बढ़ाते हैं, व्यवसायों और उपभोक्ताओं के प्रत्यक्ष हितों को नुकसान पहुंचाते हैं, और वैश्विक आर्थिक विकास के लिए दीर्घकालिक, प्रणालीगत जोखिम पैदा करते हैं। मंत्रालय ने अमेरिका से अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं में तेजी लाने का भी आग्रह किया, ताकि 60 अरब डॉलर की टैरिफ कटौती की व्यवस्था जल्द से जल्द लागू हो सके।

मोदी के डर से मिले 2 शख्स, पुतिन से मांगी जान की भीख!

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ पहली बार रूस जा रहे हैं। लेकिन रूस जाने से पहले शहबाज शरीफ ने उस व्यक्ति से मीटिंग की है जो कुछ दिन पहले दिल्ली में था और पीएम मोदी को पास से देख रहा था। यह व्यक्ति एक खास मुद्दे पर पीएम मोदी के रुख को पास से जानने की कोशिश कर रहा था। शायद यही वो मुद्दा है जो शहबाज शरीफ रूस के राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन के सामने झोली फैलाकर उठाने वाले हैं। शहबाज शरीफ अमेरिका और चीन तक से सिफारिश लगा चुके हैं। पीएम मोदी मान नहीं रहे। ऐसे में शाहबाज शरीफ को लगता है कि शायद अब पुतिन ही कुछ मदद कर सकते हैं। दरअसल शहबाज शरीफ 30 नवंबर को रूस की तीन दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर जा रहे हैं। लेकिन रूस जाने से पहले उन्होंने एक बहुत महत्वपूर्ण मीटिंग की है। मीटिंग उस व्यक्ति से की गई है जो कुछ दिन पहले दिल्ली में था। यह है पाकिस्तान के जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉक्टर मुसादिक मसूद मलिक जो दिल्ली में आयोजित शहंगाई सहयोग संगठन के सिविलाइजेशनल डायलॉग फोरम में पाकिस्तान की तरफ से आए थे। मुसादिक मसूद मलिक ने पाकिस्तान लौटकर सारी जानकारियां शहबाज शरीफ को दी हैं। खासतौर पर पीएम मोदी के बारे में। यह वही शख्स है जिसने इंडस वाटर ट्रीटी पर भारत को धमकी देते हुए कहा था कि जो भी हमारे हिस्से के पानी की तरफ हाथ बढ़ाएगा पाकिस्तान उस हाथ को काट देगा। हैरानी की बात देखिए कि इस कार्यक्रम में पाकिस्तान की तरफ से पहले संस्कृति मंत्री औरंगजेब खान खींची को आना था। लेकिन इंडस वाटर ट्रीटी पर भारत के रुख को पास से समझने के लिए पाकिस्तान ने जानबूझकर मुसादिक मसूद को दिल्ली भेजा। मुसादिक मसूद मलिक ने भारत में कई लोगों से यह जानकारी मांगी होगी कि क्या इंडस वाटर ट्रीटी पर पीएम मोदी का रुख बदलेगा? हालांकि जवाब उन्हें ना में ही मिला होगा। यही बात वो शायद शहबाज शरीफ को बता रहे हैं क्योंकि सूत्रों के मुताबिक पाकिस्तान अब सिंधु जलसंधि यानी इंडस वाटर ट्रीटी पर भारत से बात करने के लिए रूस से मदद मांग सकता है। रूस जाकर शहबाज शरीफ पुतिन से भीख मांगेंगे कि भारत से पानी दिलवा दो। इसे लेकर अब खबरें भी छप रही हैं। शहबाज शरीफ को लगता है कि पीएम मोदी की पुतिन से अच्छी दोस्ती है।

भारत–सीमा के पास चप्पे चप्पे पर पहरा दे रहा बांग्लादेश, शेख हसीना की वापसी के ऐलान के चलते कर्फ्यू जैसे हालात

भारत–बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा का पहरा अचानक और सख्त कर दिया गया है। बांग्लादेश ने सीमा से सटे इलाकों में सुरक्षा बलों की तैनाती बढ़ा दी है। वजह है पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की संभावित स्वदेश वापसी, जिसने ढाका की मौजूदा सत्ता के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दी हैं। हम आपको बता दें कि कभी 15 वर्षों तक बांग्लादेश की राजनीति पर एकछत्र राज करने वाली शेख हसीना आज भले ही भारत में रह रही हों, लेकिन उनकी वापसी की आहट ने बांग्लादेश की सियासत में भूचाल ला दिया है। सत्ता पक्ष बेचैन है, विरोधी खेमे में हलचल है और सड़कों पर हिंसा का दौर शुरू हो चुका है। हालात ऐसे बनते जा रहे हैं कि शेख हसीना की वापसी बांग्लादेश की मौजूदा सत्ता के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनती दिखाई दे रही है। हम आपको बता दें कि शेख हसीना ने दिसंबर में स्वदेश लौटने की इच्छा जाहिर की है। उनके प्रवक्ता के मुताबिक, 16 दिसंबर यानी बांग्लादेश के विजय दिवस पर उनकी वापसी की योजना है। यह तारीख अपने आप में राजनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण है। दूसरी तरफ, बांग्लादेश की मौजूदा सरकार



ने साफ कर दिया है कि हसीना के देश में कदम रखते ही उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि शेख हसीना को 2024 के छात्र आंदोलन के दौरान हुई हिंसक कार्रवाई के मामले में उनकी अनुपस्थिति में मौत की सजा सुनाई जा चुकी है। उनकी पार्टी अवामी लीग की गतिविधियों पर भी प्रतिबंध लगा हुआ है। ऐसे में उनकी वापसी की घोषणा ने बांग्लादेश की राजनीति को गरमा दिया है। साथ ही इस राजनीतिक उथल–पुथल का सबसे गंभीर असर भारत–बांग्लादेश सीमा पर दिखाई दे रहा है। बांग्लादेश ने सात जिलों में बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (ठळठ) की 108 प्लाटून तैनात कर दी हैं। इनमें अकेले शेख हसीना के गृह जिले गोपालगंज में 56 प्लाटून लगाई गई हैं। इसके अलावा चार अतिरिक्त प्लाटून को किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार रखा गया है। भारत से सटे 30 सीमावर्ती जिलों में विशेष निगरानी के निर्देश दिए गए हैं। सीमावर्ती रास्तों पर गश्त बढ़ाई गई है, संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है और हथियारों तथा विस्फोटकों की अवैध आवाजाही रोकने के लिए तलाशी अभियान तेज किया गया है। देखा जाये तो सीमा पर सुरक्षा बढ़ाने की एक बड़ी वजह यह आशंका भी है कि अवामी लीग के नेता और कार्यकर्ता भारत में मौजूद अपने ठिकानों से बांग्लादेश में प्रवेश कर सकते हैं। बांग्लादेश की सुरक्षा एजेंसियों को आशंका है कि राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने के लिए गुप्त हमले और तोड़फोड़ की घटनाओं को अंजाम दिया जा सकता है। पश्चिम बंगाल के पेट्रापोल सीमा क्षेत्र में अवामी लीग के चार वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी ने भी अटकलों को हवा दी है। वहीं, जशोर के बेनापोल सीमा क्षेत्र में ठळठ ने निगरानी और सख्त कर दी है। इस पूरे घटनाक्रम ने भारत–बांग्लादेश सीमा को एक संवेदनशील राजनीतिक और सुरक्षा मोर्चे में बदल दिया है। उधर, बांग्लादेश के भीतर हालात इससे भी ज्यादा विस्फोटक हैं। नवंबर में वाहनों को आग के हवाले करने, देसी बम फेंकने, पुलिस प्रतिष्ठानों पर हमले और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच हिंसक झड़पों की घटनाएं सामने आई हैं। 7 से 19 नवंबर के बीच देशभर में 83 वाहनों को आग लगाने और 87 स्थानों पर कच्चे बम फेंके जाने की जानकारी सामने आई। गोपालगंज में पुलिस थानों और सत्तारुढ़ ठछच के नेताओं के घरों को निशाना बनाया गया। चटगांव में नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस के पैतृक घर में भी आगजनी की घटना हुई। नारायणगंज, ढाका और दूसरे इलाकों में भी हिंसा का असर दिखाई दिया। पुलिस ने सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार किया है और सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया जा रहा है। वहीं अवामी लीग ने 29 और 30 नवंबर को देशव्यापी लॉकडाउन का आह्वान भी प्रचारित किया है। इससे सरकार की चिंता और बढ़ गई है। एक तरफ शेख हसीना समर्थक उनकी वापसी की मांग को लेकर लामबंद होने की कोशिश कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ ठछच सरकार उन्हें देश में प्रवेश करते ही गिरफ्तार करने की घोषणा कर रही है। प्रधानमंत्री तारिक रहमान की सरकार इस मुद्दे पर भारत से भी लगातार प्रत्यर्पण की मांग कर रही है। इस बीच भारत ने भी अपना रुख स्पष्ट किया है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा है कि शेख हसीना की स्वेच्छा से बांग्लादेश लौटने की इच्छा और बांग्लादेश सरकार की ओर से किए गए प्रत्यर्पण अनुरोध को दो अलग–अलग मामलों के रूप में देखा जाना चाहिए। प्रत्यर्पण अनुरोध पर भारत अपनी स्थापित प्रक्रियाओं के तहत विचार कर रहा है। बहरहाल, शेख हसीना की वापसी का सवाल अब बांग्लादेश की राजनीति का सबसे बड़ा शक्ति परीक्षण बन चुका है। 15 वर्षों तक देश की सत्ता संभालने वाली नेता की वापसी की घोषणा ने मौजूदा सरकार के सामने ऐसी चुनौती खड़ी कर दी है, जिसका असर सिर्फ ढाका तक सीमित नहीं रहने वाला। सीमा पर सैनिकों की तैनाती, शहरों में आगजनी, राजनीतिक हत्याएं, बम धमाके और गिरफ्तारी की धमकियां इस बात का संकेत हैं कि बांग्लादेश में सत्ता संघर्ष एक नए और बेहद खतरनाक दौर में प्रवेश कर चुका है। अब पूरी दुनिया की नजर 16 दिसंबर पर टिकी है।

जेनसन हुआंग ने एनवीडिया में वापसी के साथ ही ले लिया दुनिया हिलाने वाला फैसला, इन 4 देशों को चिप की सप्लाई बंद

एनवीडिया में जेनसन हुआंग की वापसी के साथ ही एक बड़ा फैसला हो गया है। अमेरिकी चिप निर्माता ने दक्षिण–पूर्व एशिया के चार देशों में सर्वर की सप्लाई रोक दी है। फाइनेंशियल टाइम्स ने गुरुवार को इस मामले की जानकारी रखने वाले तीन लोगों के हवाले से बताया कि एनवीडिया ने अपने मैन्युफैक्चरिंग पार्टनर्स से कहा है कि वे दक्षिण–पूर्व एशिया के चार देशों में सर्वर की शिपिंग रोक दें। यह कदम चीन के साथ संदिग्ध संबंधों को लेकर अमेरिका की जांच के बीच उठाया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, डेल (क्मसस) और सुपरमाइक्रो ैनचमतउपबतव) जैसे मैन्युफैक्चरिंग पार्टनर – जो एनवीडिया (छअपकपं) की चिप्स को सर्वर में लगाते हैं – उन्होंने मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड और इंडोनेशिया के खरीदारों को बता दिया है कि एनवीडिया उनके ऑर्डर की शिपिंग की अनुमति नहीं देगा। रिपोर्ट में उद्धृत लोगों ने कहा कि यह स्पष्ट नहीं है कि यह



रोक अस्थायी है या कब तक चलेगी, क्योंकि एनवीडिया और उसके साझेदार वाशिंगटन द्वारा उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) चिप्स पर लगाए गए नए निर्यात नियंत्रणों का अनुपालन करने का प्रयास कर रहे हैं। यह घटना एनवीडिया के सीईओ जेन्सेन हुआंग के इस्तीफे और फिर उनके पुनः पद पर आने के बाद घटी है। इन खबरों में उनके विवाहेतर संबंधों का जिक्र था, जिनमें एलिस हुआंग के साथ संबंध भी शामिल थे, जो मेगास्पीड नामक क्लाउड सेवा प्रदाता कंपनी चलाती थीं और चीनी कंपनियों को क्लाउड सेवाएं किराए पर देती थीं। हुआंग और एक संदिग्ध चीनी खुफिया एजेंट के साथ भी उनके संबंध थे। एनवीडिया या उसके किसी भी विनिर्माण साझेदार ने इस रोक पर कोई बयान जारी नहीं किया है।

रोक क्यों लगाई गई?

कई चीनी समूह एनवीडिया चिप्स वाले सर्वर खरीदने वाले क्लाउड कंप्यूटिंग प्रदाताओं के माध्यम से किराये पर एक्सेस लेकर अमेरिकी निर्यात नियंत्रणों को दरकिनार कर रहे हैं। जेन्सेन हुआंग के अफेयर को लेकर हुए विवाद के बाद, अमेरिकी वाणिज्य विभाग ने इसे रोकने के लिए पिछले सप्ताह नए नियम लागू किए। चीनी तकनीकी कंपनियों की मांग ने दक्षिण–पूर्व एशिया, विशेष रूप से मलेशिया और इंडोनेशिया में डेटा सेंटर के विकास को गति दी है, जहां एआई इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में अरबों डॉलर का निवेश किया गया है। नए अमेरिकी प्रतिबंधों ने इस निवेश के बड़े हिस्से को खतरे में डाल दिया है। एफटी रिपोर्ट में उद्धृत दो लोगों के अनुसार, एनवीडिया द्वारा रोके जाने से प्रभावित खरीदारों में सिंगापुर स्थित क्लाउड कंपनी आओलानी भी शामिल है, जिसने टिकटॉक की चीनी मालिक बाइटडांस को लीजिंग समझौतों के माध्यम से उन्नत कंप्यूटिंग क्षमता प्रदान करने की योजना बनाई थी। खबरों के अनुसार, एनवीडिया द्वारा निर्यात रोके जाने के कारण, जिन बैंकरों ने पहले इस प्रोजेक्ट को फाइनेंस करने पर सहमति जताई थी, उन्होंने लगभग 500 मिलियन डॉलर का क्रेडिट देना बंद कर दिया है। इसके चलते बाइटडांस इस डील को रद्द भी कर सकता है।

ईरान न युद्ध से रुका न पाबंदियों से, यूएस दबाव पर बोले मसूद पेज़ेशकियान

ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेज़ेशकियान ने गुरुवार को कहा कि प्रतिबंधों, सैन्य आक्रामकता और बाहरी दबाव के बावजूद ईरान ने उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश अपनी आंतरिक क्षमताओं और जनता की भागीदारी के दम पर विकास के रास्ते पर आगे बढ़ना जारी रखेगा। आईआरएनए समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, एक नई शहरी ट्रेन लाइन के पहले चरण के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए, पेज़ेशकियान ने ईरानियों से अपने मतभेदों को भुलाकर एकजुट होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि देश के विरोधी ईरान के विकास में बाधा डालने की कोशिश कर रहे हैं। पेज़ेशकियान ने कहा दुश्मन नहीं चाहते कि ईरान तरक्की करे, लेकिन हमें अपने मतभेदों को किनारे रखकर एक साथ आना चाहिए। अपनी आंतरिक ताकत और लोगों की भागीदारी के भरोसे, हमें देश की प्रगति, विकास और समृद्धि के रास्ते पर मजबूती से आगे बढ़ना चाहिए।ष उन्होंने आगे कहा कि ष्भले ही दुश्मनों ने प्रतिबंधों और युद्ध के जरिए देश के लिए कठिन हालात पैदा किएष फिर भी ईरान ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। बुधवार रात और गुरुवार सुबह रज़वी खोरासान प्रांत के दौरे के दौरान, ईरानी राष्ट्रपति ने यह भी कहा कि ईरान की जनता अपने देश की रक्षा के लिए मजबूती से खड़ी रहेगी और अमेरिका या इज़राइल के दबाव के आगे नहीं झुकेगी। पेज़ेशकियन ने कहा कि ईरान के विरोधी, आर्थिक दबाव बढ़ाकर और सामाजिक व राजनीतिक मतभेदों का फायदा उठाकर देश के विकास को रोकने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने सभी राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों से देश के संचालन में सहयोग करने की अपील की और चेतावनी दी कि आंतरिक मतभेद बाहरी विरोधियों के हितों को साधने का काम कर सकते हैं। क्षेत्रीय तनाव के बीच देश की अनिश्चित स्थिति का जिक्र करते हुए, पेज़ेशकियन ने उस स्थिति को सुलझाने का आह्वान किया जिसे उन्होंने ष्न युद्ध, न शांतिष की स्थिति बताया। उन्होंने स्पष्ट किया कि ईरान की भविष्य की दिशा तय करने का मतलब जरूरी नहीं कि युद्ध का विकल्प चुनना हो। उन्होंने कहा कि कोई भी फैसला लेते समय देश की क्षमताओं, उपलब्ध संसाधनों, संभावित परिणामों और स्पष्ट रूप से तय किए गए लक्ष्यों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अराघचीका आरोप, यूएस को युद्ध में घसीटने की फिराक में इजराइल

ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने बुधवार को तेहरान पर रासायनिक हथियार विकसित करने के आरोपों को लेकर इजरायल पर पलटवार किया और इजरायली सरकार पर सामूहिक विनाश के हथियार (डब्ल्यूएमडी) रखने और अमेरिका को ईरान के साथ एक और संघर्ष में घसीटने की कोशिश करने का आरोप लगाया। एक्स पर एक पोस्ट में, अराघची ने इन आरोपों को खारिज करते हुए इजरायल पर ऐसे दावे करने का आरोप लगाया जो उनके अपने आचरण को दर्शाते हैं। अराघची ने कहा, एक ऐसा शासन जो डब्ल्यूएमडी से पूरी तरह लैस है, ईरान पर रासायनिक हथियार विकसित करने का आरोप लगा रहा है। लेकिन जैसा कि अब पूरी दुनिया जानती है इजरायल के साथ, हर आरोप एक स्वीकारोक्ति है। पोस्ट के साथ जारी एक अलग बयान में ईरानी विदेश मंत्री ने इज़राइल पर आरोप लगाया कि वह परमाणु, रासायनिक और जैविक हथियारों पर रोक लगाने वाले अंतरराष्ट्रीय समझौतों में शामिल होने से इनकार कर रहा है। साथ ही, उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि इज़राइल, वाशिंगटन (अमेरिका) को तेहरान के साथ एक और टकराव की ओर धकेलने के लिए गुमराह करने की कोशिश कर रहा है। बयान में कहा गया इज़रायली शासन ने परमाणु, रासायनिक या जैविक हथियारों पर प्रतिबंध लगाने वाले किसी भी समझौते में शामिल होने से इनकार कर दिया है। उसके पास सैकड़ों परमाणु हथियार हैं, उसने इस क्षेत्र के सात देशों पर हमले किए हैं और तीन देशों के इलाकों पर कब्ज़ा कर रखा है। केवल पिछले एक साल में, उसने अमेरिका को ईरान के खिलाफ दो असफल युद्धों में घसीटा है। अराघची ने ईरान का पक्ष रखते हुए बताया कि ईरान श्परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकनेश (दवद–चतवसपमितंजपवद) और रासायनिक हथियारों से जुड़े अंतरराष्ट्रीय संगठनों का सदस्य है और खुद भी



रासायनिक हथियारों का शिकार रहा है। बयान में आगे कहा गया, अब, यह युद्ध भड़काने वाला देश बेशर्मी से ईरान पर आरोप लगा रहा हैकृजबकि ईरान छच्ज (परमाणु अप्रसार संधि) पर हस्ताक्षर करने वाला देश है, व्ब्ॅ (रासायनिक हथियार निषेध संगठन) का सदस्य है, और खुद भी उन रासायनिक हथियारों का शिकार रह चुका है जिन्हें पश्चिमी जर्मनी ने सद्दाम हुसैन के शासन को मुहैया कराया था। ईरान पर आरोप है कि वह दवा बनाने वाली फैक्ट्रियों में ऐसे खतरनाक हथियार बना रहा है और उन्हें छिपा रहा है। ईरानी विदेश मंत्री ने आगे आरोप लगाया कि इन आरोपों का मकसद अमेरिका को ईरान के खिलाफ एक और युद्ध छेड़ने के लिए उकसाना है, जिससे ईरानी नागरिकों की जान खतरे में पड़ सकती है।

इजराइल के ताजा हमलों में गाजा में आठ लोगों की मौत

गाजा में इजराइल के रातभर किए गए हमलों में आठ फलस्तीनी मारे गए। वहीं, ब्रिटेन की एक सैन्य निगरानी संस्था ने बताया कि दुबई के पश्चिम में फारस की खाड़ी में एक टैंकर के पास विस्फोट हुआ। गाजा के शिफा अस्पताल और अल–अक्सा शहीद अस्पताल के स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, बृहस्पतिवार तड़के तक किए गए इजराइल के तीन हमलों में गाजा शहर और मध्य गाजा में आठ फलस्तीनी मारे गए।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।

